ग्राम-स्वराज्य की दिशा में : ५

गुजरात के ग्रामदान

•

वसन्त व्यास

•

सर्व सेवा संघ प्रकाशन

प्रकाशक : मन्त्री, सर्व सेवा संघ,
राजघाट, वाराणसी

संस्करण : पहला
प्रतियाँ : १,०००; अप्रैल, १९६७
मुद्रक : बलदेवदास,
संसार प्रेस,
काशीपुरा, वाराणसी

मूल्य : दो रुपये

Title : GUJRAT KE GRAMDAN
Author : Vasant Vyas
Subject : Bhoodan and Gramdan
Publisher : Secretary,
Sarva Seva Sangh,
Rajghat, Varanasi

Edition : First
Copies : 1,000; April, 1967
Price : Rs. 2.00

यह पुस्तक-माला

ग्रामदान-आन्दोलन के बारे में—खास करके पढ़े-लिखे लोगों में—सबसे बड़ी जिज्ञासा यह रहती है कि अब तक जिन गाँवों में ग्रामदान हुए हैं, वहाँ क्या हुआ ? क्या सचमुच उन गाँवों में ऐसा कोई सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन हुआ है, जिसकी कल्पना सर्वोदय कार्यकर्ता पेश करते हैं ? बहुत-से लोग अविश्वास की भावना से पूछते हैं : "आप जैसा कहते हैं, वैसा किन्हीं गाँवों में हुआ हो तो बताइये।"

भारत के सभी प्रान्तों में कुछ न-कुछ ग्रामदान हुए हैं, कहीं कहीं तो सैकड़ों-हजारों तक उनकी संख्या पहुँची है। फिर भी हमारा देश जितना विशाल है, उसके मुकाबले में ग्रामदानों की संख्या बहुत कम है। करीब साढ़े पाँच लाख गाँवों में से अभी तक ३५ हजार गाँवों का ग्रामदान हुआ है। इसलिए, हालाँकि आज के स्वार्थपूरित वातावरण मे ग्रामदान होना अपने-आपमें एक बड़ी घटना है, फिर भी इन ग्राम-दानों का समाज पर, खासकर बुद्धिजीवी लोगों पर, विशेष 'इम्पैक्ट', प्रभाव नहीं पड़ा है। इसके अलावा शहरों और कसबों का जीवन भी अपने-आपमें इतना स्व केन्द्रित है कि उनका गाँवों से कोई सम्पर्क नहीं है। दोनों की दुनिया अलग-अलग है।

सर्वोदय का काम करनेवाले लोग दावा करते हैं कि ग्रामदान एक नये समाज के निर्माण का रास्ता खोल देता है। ग्रामदान से भारत के देहात में एक शान्त क्रान्ति खड़ी हो रही है। बेकारी, गरीबी, अन्याय और शोषण से पीड़ित जनता की मुक्ति का यह एक कारगर उपाय

है। इसलिए यह जिज्ञासा स्वाभाविक है कि क्या सचमुच ऐसा कहीं हुआ है या होना संभव है?

सही माने में इस जिज्ञासा की तृप्ति तो तभी सम्भव है, जब ग्रामदानी गाँवों में जाकर वहाँ की परिस्थिति को प्रत्यक्ष देखा जाय, पर सबके लिए यह सम्भव नहीं है, न जरूरी है। सर्व सेवा संघ प्रकाशन की योजना है कि ऐसे कुछ ग्रामदानी गाँवों या ग्राम-समूहों की जानकारी जनता के सामने पेश करे, जहाँ उपर्युक्त दिशा में कुछ काम हुआ है।

यहाँ एक बात समझ लेना जरूरी है। ग्रामदान गाँव की आजादी और उसकी समृद्धि की प्रक्रिया की शुरुआत है, उसकी उपलब्धि नहीं। ग्राम स्वराज की मंजिल लम्बी और मुश्किल है। ग्रामदान से उसकी राह खुल जाती है, इतना ही। एक बार ग्रामदान हो जाने पर भी अगर आगे अनुकूल कदम न उठे, प्रारम्भिक सद्भावनाओं को पोषण न मिले, तो गाँव वापस पहले की-सी स्थिति में आ जायँ, इसमें आश्चर्य नहीं है। इसलिए उन सभी जगहों में, जहाँ ग्रामदान हुए हैं, हमें नया समाज या नया वातावरण देखने को नहीं मिलेगा। माली सैकड़ों पौधे लगाता है, कुछ बढ़ते हैं, कुछ मुरझा जाते हैं।

ग्रामदान यानी सफर की समाप्ति नहीं, आरम्भ है। कोई ग्रामदानी गाँव कुछ आगे बढ़ा हुआ मिलेगा, कोई पीछे। ग्रामदान सामान्य विकास का कार्यक्रम भी नहीं है। कितने मकान बने, कैसी सड़क बनी, स्कूल बना या नहीं—इन बातों से ग्रामदान की सफलता नहीं आँकी जायगी। लेकिन अगर गाँव में परिवार-भावना बढ़ी, सहयोग की वृत्ति पैदा हुई, एक दूसरे के सुख दुख में हिस्सा लेने की आकांक्षा जाग्रत हुई, मिल-जुलकर काम करने का वातावरण बना, गाँव का अभिक्रम प्रकट हुआ, तो मानना होगा कि नये समाज के निर्माण की राह खुल गयी है। और यह बातें हुईं तो फिर गाँव का उत्पादन, गाँव की समृद्धि, गाँव की सम्पत्ति आदि तो बढ़नी ही चाहिए।

श्री वसन्त व्यास सर्व सेवा संघ की ओर से खास तौर से इस तलाश में भारत के विभिन्न प्रान्तों में घूमे हैं और घूम रहे हैं। हफ्तों ग्राम दानी क्षेत्रों में रहकर वहाँ की स्थिति का अवलोकन किया है, जानकारी हासिल की है। जगह जगह ग्रामदानी गाँवों के ग्राम समूहों में क्या हो रहा है, उसकी एक झलक इस पुस्तक माला में पाठकों को मिलेगी। 'झलक' शब्द का इस्तेमाल जान बूझकर किया गया है, क्योंकि ग्रामदान के पहले क्या स्थिति थी और अब उसकी अपेक्षा क्या अन्तर पड़ा, इसका पूरा चित्र प्रस्तुत करने के लिए जितनी और जिस तरह की जानकारी, आँकड़े, तथ्य आदि चाहिए, वे कोशिशों के बावजूद भी उपलब्ध नहीं हो पाते हैं। गाँवों में तो इस तरह की क्षमता का अभाव है ही, किन्तु जो कार्यकर्ता वहाँ काम करते हैं, उनमें भी दुर्भाग्य से अभी काम का नाप तौल रखने, उसका मूल्यांकन करने आदि की वैज्ञानिक वृत्ति और योग्यता नहीं है। उसका महत्त्व भी वे नहीं समझे हैं।

आशा है कि ग्रामदानी गाँवों और क्षेत्रों से सम्बद्ध पुस्तकमाला का प्रकाशन इस कमी की ओर कार्यकर्ताओं का ध्यान खींचेगा। ग्राम दान के बाद गाँव में क्या परिवर्तन होता है या हो सकता है, वास्तव में कहाँ क्या हुआ है—इन प्रश्नों का कुछ उत्तर भी पाठकों को मिलेगा।

हमारी आन्तरिक प्रार्थना है कि इस माला का प्रकाशन ग्रामदान में निष्ठा जाग्रत करने और उसे वेग देने का साधन बने!

●

प्रकाशकीय

प्रस्तुत पुस्तक में गुजरात के ग्रामदानी गाँवों के निर्माण और अभ्युदय का विवरण दिया गया है। गुजरात भारत के पश्चिमी सिरे का एक ऐसा प्रान्त है, जिसने अनेक ऐतिहासिक क्रान्तियाँ का सर्जन किया है। हजारों वर्षों से गुजरात देश की राजनीति का, सामाजिक क्रान्ति का एक जीवन्त क्षेत्र रहा है। गांधीजी गुजरात में हुए और वहीं से उन्होंने आज़ादी का शंखनाद किया।

भूदान-आन्दोलन में भी गुजरात किसी प्रदेश से पीछे नहीं रहा और अनेक प्रबुद्ध जनों की सेवा से यह आन्दोलन गतिशील हुआ है! ग्रामदान की दिशा मे हरिवल्लभ भाई परीख के सत्प्रयास तथा साहस के कारण आदिवासी क्षेत्र मे हृदय-परिवर्तन का जो अपूर्व दर्शन हुआ है, वह तो अद्भुत है।

श्री वसंत व्यास ने जानकारी, तथ्य और आँकड़ों के आधार पर यह पुस्तिका तैयार की है। पाठक देखेंगे कि हमारे देश के लाखों गाँवों में किस प्रकार की सामाजिक क्रान्ति की जरूरत है।

इस पुस्तक-माला के अन्तर्गत तमिलनाड, आन्ध्र, कोरापुट, आदि क्षेत्रों की पुस्तकें निकल चुकी हैं। यह इस माला की पाँचवीं पुस्तक है। इसी तरह और प्रदेशों की पुस्तकें भी प्रकाशित करने की योजना है।

•

अनुक्रम

•

धर्म-वचन

१. केवलाघो भवति केवलादी—जो अकेला खाता है, वह परम पापी होता है।

—ऋग्वेद

२. यः अर्थशुचिः स शुचिः—जो आर्थिक दृष्टि से शुद्ध है, वह पवित्र है।

—मनु

३. लाखों मनुष्य हमारे जैसी ही इच्छा रखते हैं ऐसा मालूम हो, तब हमारा हृदय ज्यादा अच्छा बनता है और अच्छेपन में बड़ी ताकत रहती है।

—मैक्सिम गोर्की

४. सच्चा स्वदेशाभिमान याने अपने देश के लिए प्रेम नहीं, परन्तु भूमिमाता के लिए प्रेम। भूमिमाता सबकी धात्री है। आखिर दुनिया में जो कुछ है, वह सब माँ वसुन्धरा की कोख से ही पैदा होता है। जो भूमिमाता को भूल जाते हैं या उसकी अवहेलना करते हैं, वे जरूर विनाश के पथ पर हैं।

—डॉ० सी० वी० रमन्

५. राज्ञः सत्त्वे असत्त्वे वा विशेषो नोपलक्ष्यते।
कृषीवलविनाशे तु जायते जगतो विपत्॥

राजा रहे या न रहे, उससे कोई खास फरक पड़नेवाला नहीं है, परन्तु किसान का नाश हुआ, तो जगत् पर आफत छायेगी।

•

वीरों की यह वाट है भाई···· :१:

'वे कौन हैं ?'

'कौन ?'

'वे·· जो सिर्फ लंगोटी लगाये सभा के पीछे खड़े हैं ?'

'हाँ'·'वे तो आदिवासी लोग हैं !'

'वे यहाँ कैसे ?'

'बस, यह समझिये, यहाँ से पूरब में मीलों तक वे ही लोग बसे हुए हैं।'

'अच्छा ······।'

सन् १९४८ की गांधी जयन्ती के अवसर पर बड़ौदा जिले के सम्पन्न कोसिन्द्रा गाँव मे निमंत्रित विशेष अतिथि को जब यह मालूम हुआ कि यहाँ से आगे अब आदिवासियों का ही प्रदेश है, तो सभा खतम होने पर उन्होंने पूर्वी क्षेत्र मे घूमने की अपनी खास इच्छा व्यक्त की। गाँव के कुछ युवक उनके साथ हो लिये।

घूमना शुरू हुआ। एक गाँव मे जा पहुँचे। ४० घर की आबादी। मालूम हुआ कि हरएक घर बनिये का कर्जदार है।

दूसरे गाँव गये। वहाँ मालूम पड़ा कि गाँव की आधी से ज्यादा जमीन साहूकारों के हाथों मे चली गयी है।

तीसरे गाँववालो ने बताया कि नजदीक के कस्बे के व्यापारी देहात का कर्जा वसूल करने के लिए 'मारा' रखते हैं। हमारे ही गाँव मे पिछले बरसो मे तीन खून करवाये गये।

'काका (साहूकार) से हिसाब कोई पूछ ही नहीं सकता । मेरे बाप ने हिम्मत करके पूछा तो बस उनको जिन्दा जला दिया गया ।' रोष और दुःख से एक युवक फटे स्वर मे उस जनसमूह मे से बोल पड़ा । उसकी आँखें गीली हो गयी थीं ।

'मेरी लड़की को अफसर उठा ले गये थे और उससे बलात्कार किया,' चौथे गॉव मे सुनने को मिला । उसी गॉव मे जानने को मिला कि कुछ ही दिन पहले एक किसान की पत्नी पर पुलिस ने पाशविक अत्याचार किया था ।

'मेरे पिता के पिता ने बैल खरीदने के लिए बनिये से ५० रुपये लिये थे । वह कर्जा चुकाते-चुकाते वे दोनों मर गये । फिर भी पूरा नहीं चुका, तो गत साल मेरी चारो एकड़ अच्छी जमीन उसने ले ली । अब अपाहिज माँ और परिवार के सात लोगों को कैसे पाल सकूँगा ?' पाँचवें गॉव में मथुर नाम का किसान फूट-फूटकर रोने लगा ।

'जंगल विभागवाले हमारे गॉव से घी और मुर्गी बारी बारी से ले जाते हैं । इस बार मेरी बारी है । घर मे खाने को अन्न नहीं, तो इनको मुर्गी, घी कहॉ से दूँ ?' भंगड़ाभाई भील के मुँह से छठे गॉव का आर्तस्वर सुनाई दिया ।

गांधी के उस जवान अनुयायी ने इस अनजान प्रदेश मे बड़ी जिज्ञासा से यात्रा शुरू की थी, किन्तु जैसे-जैसे वह आगे बढ़ता गया, वैसे-वैसे उसका आश्चर्य और दिल का बोझ बढ़ता गया । शोषण, दमन और अत्याचार की उसने जो बहुमुखी वारदातें सुनीं, दीन-हीन लोगों की भयंकर कंगाली के जो नजारे देखे, उससे वह सहम गया, उसका दिल उद्विग्न हो उठा । प्रदेश दर्शन की यात्रा के साथ साथ खुद का आन्तर-दर्शन भी चलता रहा । सप्ताह के अन्त

से जब १६ गाँवों की यात्रा पूरी हुई, तब करीब-करीब उसी समय मन का मथन भी पूरा हुआ, अन्तरतम के साथ पक्का निश्चय हो चुका—'बस यही मेरा कार्यक्षेत्र है, यही मेरा जीवनक्षेत्र है।'

सेवा-समर्पित

श्री हरिवल्लभभाई और उनकी सहधर्मिणी प्रभाबहन

लगभग २० दिन के बाद जाड़े की एक सुहावनी सुबह वह युवक अपनी पत्नी के साथ, इस क्षेत्र के बीच बहनेवाली हिरण नदी के किनारे बसे हुए बोटा गाँव की देहरी में आ पहुँचा। गाँव में प्रवेश करते ही गाँव के मुखिया ने सुना दिया—'हमारे गाँव में आपकी कोई जरूरत नहीं है, आप वापस चले जाइए।' कुछ दिन पहले ही सरकारी कर्मचारी और साहूकार गाँववालों को धमका गये थे कि यह जवान आदमी आता है, तो गाँव में उसको कोई स्थान न दिया जाय। गाँववाले डर गये थे।

यह युवा दंपती खामोश रहे। दोनों चुपचाप गाँव के बीच-वाले नीम के पेड़ के नीचे बैठ गये। दोनों सुबह-शाम प्रार्थना करते। रोज गाँव की सफाई करते। उनके गन्दे बच्चों को प्रेम से गोद में बिठाकर पुचकारते, दुलारते और कुतूहलवश देखने आनेवाले सभी स्त्री-पुरुषों को स्नेह से बुलाते। आज तक जिनकी सर्वथा उपेक्षा ही हुई, जिनका हमेशा तिरस्कार ही किया गया और बाहर से आनेवालों ने जिनका शोषण और पीड़न ही किया, उन आदिवासी लोगों ने अपने प्रति मोहब्बत की यह निर्व्याज सगाई देखी, तो अब तक का सारा कुतूहल प्रेम में बदल गया। आखिर दिल को दिल पहचान ही लेता है,..... और एक किसान ने अपनी झोपड़ी में जगह दी—लोक-हृदय का प्रवेश-द्वार खुला।

शाम को भजन-कीर्तन, कथा-कहानी और प्रौढ़ वर्ग चलने लगे, तो दिन में गाँव का कोई छोटा-मोटा झगड़ा सामने आता, उसको निपटाते। नजदीक के गाँवों के झगड़े की खबर सुनकर वहाँ भी जाने लगे। दो-तीन महीनों में अपने-आप कई गाँवों में खबर फैल गयी कि बाँटा में एक साधु आया है और सबके झगड़े निप-टाता है। फिर तो सेवक का दरबार भरा ही रहने लगा—दिन में झगड़े निपटाना और रात में लोक शिक्षण। थोड़े समय पहले जिस दम्पती को गाँव में पाँव रखने की इजाजत नहीं थी और घुस-पैठियों की तरह प्रवेश किया था, वे अब गाँव के लोगों के 'भाई' और 'बहन' बन गये। उनको रहने के लिए लोगों ने स्वतन्त्ररूप से एक छोटा-सा कच्चा निवास भी खड़ा कर दिया।

छेदड़िया ने अपनी पत्नी छेदड़ी को घर से निकाल दिया। तीन बच्चेवाली! अब यह कहाँ जाय?

भदुडिया के साहूकार ने उससे ४० रुपये कर्ज में ५ बीघे का खेत ले लिया है।

कूतरा के पिताजी के मर जाने से उसके नाम पर जमीन चढ़ाना है, तो मूलजी पटवारी २५ रुपये माँगता है।

पुलिस-जमादार के पास कादवा फरियाद करने गया, तो जमादार ने फरियादी और गुनहगार—दोनों को पीटा और दोनों से १०-१० रुपये ऐंठ लिये।

रामा ने जानमियाँ की दुकान से ३० रुपये की चीज खरीदी थी और आज वह ५५ रुपये बाकी निकालता है।

रघला पटेल के रहते गाँव की कोई भी बहन-बेटी सुरक्षित नहीं रह सकती।

'मेरी पत्नी डाइन है और गाँव के बच्चों को खा जाती है, इसलिए मेरे गाँव के लोग इकट्ठा होकर उसको जला देनेवाले हैं,' भूखलाभाई आकर कहता है।

'रात को शराब पीकर मेरे पति ने लाठी से मेरा सिर तोड़ दिया' देवडी बहन का खून से सना चेहरा ही उसकी गवाही देता है।

भाई के पास इस तरह के झगड़ों का प्रवाह चालू ही रहता था। आते समय दोनों पक्ष लड़ते-झगड़ते, मारते-पीटते, गाली-गलौज करते हुए आते थे और जाते समय एक-दूसरे के हाथ का गुड़ खाकर हँसते हुए रामराम करके जाते थे। पहले इसी प्रकार के झगड़े धीरे-धीरे उग्ररूप ले लेते और उसीमें से मारकाट और खून होते थे।

सप्ताह में एक-दो खून हो जाना इस क्षेत्र के लिए साधारण बात थी। जब इस लोक-शिक्षा की प्रथा से झगड़े निपटने लगे

और खून बन्द होने लगे, तो ऊपर के पुलिस अधिकारी को शक हुआ कि निश्चय ही दारोगा घूस लेकर खून का मामला वहीं समाप्त कर देता होगा। उसने तहकीकात करवायी तो पता चला कि एक नवजवान सेवक के आने से यह सारा हो रहा है। डी० एस० पी० तक यह बात पहुँची।

एक दिन नजदीक के गाँव का एक मामला सुलझाने का प्रयत्न चल रहा था। उतने में दौड़ती हुई एक जीप आकर वहाँ रुकी। सबको लगा कि कोई बड़े व्यापारी होंगे। उनको बगल के अच्छे घर में बिठाने की व्यवस्था हुई, किन्तु उन्होंने वहीं बैठे रहने का आग्रह रखा। आगन्तुक देख रहे थे कि युवा दम्पती सेवा में मग्न हैं। पत्नी एक बेहोश घायल बहन की मरहम-पट्टी कर रही है और पति मामले का समाधान करने में दिलोजान से लगा है। डेढ़ घंटे के बाद मामले का सुखद फैसला हुआ। मोहन ने रामला की स्त्री को पीटा है, तो वह जब तक अच्छी नहीं होती, तब तक *मोहन की स्त्री रामला के घर खाना बना देगी और मोहन रामला* के जानवर चराने का काम कर देगा। समाधान पत्र पर हस्ताक्षर हुए और गुड़ बाँटा गया और सब मिलकर घर चले गये। सबके चले जाने के बाद उस आगन्तुक सज्जन ने बताया: 'मैं आपके कार्य से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। मैं इस जिले का डी० एस० पी० हूँ।'

इस तरह इस क्षेत्र में चल रहे परिवर्तन की बात राज्य के मन्त्रिमंडल तक पहुँची और इस प्रवृत्ति को बढ़ाने के लिए जमीन भी मिल गयी।

साहूकार के और अफसरों के शोषण और दमन से तो यहाँ का आदिवासी त्रस्त था ही, परन्तु इसके अलावा और भी कई बातें थीं।

यह आदर्शवादी स्वप्नशील युवक अपने क्षेत्र में घूमते हुए ··· अपने काम के प्रसंगों से हररोज देखता है कि बाघ और हिंस्र पशुओं के साथ लड़कर उसके बीच रहनेवाला यह प्राणवान् वनवासी, साहूकार और अफसरशाही के शोषण और दमन के नीचे डरपोक कुत्ते जैसा जीवन जी रहा है, इसमें से तो इसको मुक्त करना ही है, किन्तु और भी कई बातें हैं ··। वह देखता रहता है···'कइयों के पास खेत ही नहीं है, इसलिए अच्छी फसल नहीं और फसल नहीं तो खाना-कपड़ा नहीं। कइयों के पास मकान नहीं, और हैं भी तो घरौंदे जैसे। इनके बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध नहीं। नशे में डूबे हैं। रूढ़ियों में फँसे हैं। बीमारियों से ग्रस्त हैं। ओझा के बताये हुए भूत, पिशाच और डाइन के चक्कर में इनके दिमाग घूमते हैं। संक्रामक रोग फैलता है, तब बलि चढ़ाते हैं। बात की बात में आदमी आदमी को काट डालता है। पति कई पत्नियाँ बदलता है। पत्नी कई पति बदलती है। एक आदमी के अनेक स्त्रियाँ हैं। तलाक देना सामान्य बात है। पारिवारिक जीवन स्थिर नहीं है··· । यह आज की स्थिति है, कैसे इसको पार कर सकूँगा ? कैसे इस भयानक अज्ञान, अनवस्था, शोषण और दमन को इनके सहयोग से मिटा सकूँगा ?'

सभी तरह की कठिन परिस्थिति में काम करने का आत्मा का संकल्प है।

इन दरिद्रनारायणों की सेवा करने के लिए मन, बुद्धि सदा तत्पर हैं और उनकी आज्ञा के अनुसार हरदम चलते रहने के लिए सुदृढ़ शरीर है।

अब क्या चाहिए ?

व्यापक सेवाक्षेत्र की प्रवृत्तियाँ चलाने के लिए और नये साथियों के लिए थोड़े मकान हो जायँ ·· !

साधन के बिना किसका अटका है ?

आंबालग गाँव का किसान पटवारी के अन्याय के विरुद्ध फरियाद लेकर आया। उस गाँव के जागीरदार के नाम चिट्ठी लिखी गयी। किसान चिट्ठी लेकर गया तो जागीरदार साहब ने पूछा कि वे अभी कहाँ हैं ? किसान ने बताया कि अभी तो देहातों में घूमने निकल गये हैं और मकान के लिए कुछ लकड़ी जुटाने की बात करते थे।

पटवारी को बुलवाकर उन्होंने किसान को न्याय दिलवाया और दूसरे दिन, जून महीने की उस कड़ी धूप में वे शिक्षित जागीरदार रणजीत सिंहजी १८ मील .साइकिल पर चलकर बोंटा पहुँचे, भाई को अपने गाँव ले गये और छोटा-सा स्वागत समारोह करके तीन मंजिला मकान अर्पण किया।

ईश्वर-प्रसाद के रूप में प्राप्त उस पुराने राजप्रासाद का सारा मलबा हिरण नदी के सामने किनारे पर रंगपुर गाँव की बगल की झाड़ियों में, पहले जहाँ इस प्रदेश के राजा और रियासतदार जंगली जानवरों के शिकार के लिए आते थे, उसी जमीन पर लाया गया और देखते-देखते थोड़े दिनों में, अपनी बैलगाड़ियों से मलबा ढोनेवाले अगल-बगल के गाँवों के उन किसानों ने ही दो-तीन मकान खड़े कर दिये।

इस प्रदेश की जिंदगी में अब तक यहाँ की प्रजा का न कोई अपना स्थान था और न कोई अपना आदमी था। बस ! अब इन्होंने 'आश्रम' के रूप में अपना स्थान पाया और 'भाई' के रूप में अपना आदमी पाया ! क्षेत्र की साधारण जनता में चारों ओर खुशी की लहर दौड़ गयी !!

●

कौन है यह ? : २ :

'कौमी बुनियाद पर इस महादेश के दो टुकड़े हो गये थे और दोनों जगह जोरों की हुल्लड़बाजी, भयंकर मारकाट और पाशविक अत्याचार हो रहे थे। हिन्दू और मुसलमान को एक माँ की दो आँखें माननेवाले राष्ट्रपिता की आर्तवाणी प्रार्थना-सभाओं में कम्पित स्वर में निकल रही थी। उसमें उन्होंने इस युवक के कार्य का उल्लेख किया और 'शांति-सैनिक' कहकर उसका गौरव किया।

अपनी जान की बाजी लगाकर एक मुस्लिम बुजुर्ग को बचाने के प्रयत्न में गरदन के ऊपर जो सख्त चोटें लगीं, उससे सारी नसें कुचल गयीं और नाड़ियाँ चर्र बोल गयीं। उसका दर्द महीनों तक रहा। तब से गरदन का वह भाग सूरज का सीधा ताप सहन नहीं कर सकता है, इसलिए सिर पर आज भी कपड़ा बाँधे रखना पड़ता है जिससे गरदन ढकी रहे। कपड़े का वह टुकड़ा उस दिन एक प्रकार से कौमी और मानवीय एकता का प्रतीक बना था। आज वह नव समाज-निर्माण का प्रतीक बन गया है। आज भी वह जवान सिर पर अपना कफन बाँधकर, मौत को हथेली पर रखकर, निर्भयता से काम कर रहा है। कवि ने ठीक ही गाया है :

सर पर बाँध कफन जो निकले बिन सोचे परिणाम रे।
वीरों की यह बाट है भाई कायर का नहिं काम रे...... ॥

यह वही युवक है जिसको कई लुभावनी जगहों का निमत्रण था, कई बडे लोग अपने यहाँ बुला रहे थे, किन्तु वह था जो सब छोडकर गाधी के 'दरिद्रनारायण की सेवा' और 'देहात चलो' के दो शब्द पर लोकाधार का सकल्प लेकर सन् १९४९ से गुजरात की सरहद पर बसे लाखो वनवासियो के बीच जा बैठा और वहाँ जिसने अहिंसक क्रान्ति का झडा फहराया। वह पराक्रमी युवक है हरिवल्लभ परीख।

पाँच भाइयों में सबसे छोटा हरि। पढने मे और लडने म पहला नबर। दादा सौराष्ट्र के ध्रागध्रा राज्य के दीवान, पिताजी राजस्थान के प्रतापगढ स्टेट के उच्चाधिकारी। तो छोटे हरि के मन मे भी बडे होकर किसी राज्य का सचालन करने की ख्वाहिश थी। किन्तु ईश्वर ने कुछ और ही सोचा था।

बचपन मे घर पर मालवीयजी, ठक्करबापा, रामेश्वरी नेहरू आदि लोग आते थे। बडे भाई बी० ए० मे पढते थे। उनको राष्ट्रीय सस्कार छू गये। वे छोटे भाइयो को प्रार्थना करवाते थे, अच्छा साहित्य पढाते थे, खादी पहनाते थे और व्यसनों से दूर रखते थे। हरि ने १४ वर्ष की आयु में मैट्रिक पास किया, तो पिताजी विदेश भेजना चाहते थे और बडे भाई वर्धा की सिफारिश कर रहे थे। आखिर विजय वर्धा की ही हुई। वहाँ थोड़ी तालीम ली और राजस्थान तथा सिंध मे स्वराज आदोलन में भिड गये। शहीद हेमु कलाणी आदि के साथ घूमकर अग्रेज सरकार को उखाड फेंकने की विद्रोही कार्रवाइयों में हिस्सा लिया और साधु बाबा, साइकिल के एजेंट और स्त्री की भूमिका में रहकर सफलतापूर्वक काम किया। फिर से गाधी के अहिंसा-मार्ग पर आये। स्वेच्छा से अपने को कानून के हवाले किया और

९ महीने साबरमती जेल में रहे। राष्ट्रीय कार्य की वजह से वे अरुणा आसफअली, डॉ० लोहिया और सुचेता कृपालानी आदि के परिचय में आये। बापू की आज्ञा से कस्तूरबा ट्रस्ट की सहायता का कार्य किया और बाद में अकाल पड़ने पर मुनि संतबालजी के साथ भाल क्षेत्र में काम किया। आखिर बड़ौदा जिले के वनवासियों को देखकर उन्हींके बीच बस गये।

अपने आराध्य देवों के बीच बसे आज उन्हें अठारह बरस हो गये। •

जन-गण जाग रहा है : ३ :

काम करते करते थोड़े ही समय मे हरिवल्लभ भाई के ध्यान मे आया कि अनेक गाँवो की १५ प्रतिशत से ७५-८० प्रतिशत तक जमीन जमींदार या व्यापारियो के पास रेहन पडी है और कई जगह तो गाँव की करीब आधी जमीन बाहर रहनेवाले 'बडे' लोगो के हाथो बिक गयी है। मूल किसान अपनी खुद की जमीन पर आज टेनेंट बनकर काम कर रहा है। उसकी पैदा की हुई फसल में से उसे केवल तीसरा हिस्सा मिलता है। तिसपर उस जमीन पर आज उसका कोई अधिकार नहीं है।

सात बेडिया' के ९ किसानों की और 'रतनपुर' के ३ किसानो की ५० ५० बीघा जमीन एक गैर अधिकारी गाँव के बडे भूमिवाले के यहाँ निश्चित मुद्दत के लिए रखी गयी थी। 'खडकिया' गाँव के दो किसानो की १० एकड जमीन पडोस के एक कस्बे के आदमी के पास निश्चित मुद्दत के लिए रखी गयी थी। समय बीत जाने पर भी वे छोडते नहीं थे। उन्हे जाकर समझाया गया। शुरू मे वे नहीं माने। बाद मे लिखकर भेजा कि अगर आप अपने पैसे न ले जायँ और हमारी जमीन वापस न करें, तो हम पैसे सरकारी खजाने में जमा करके किसानो के साथ जमीन का कब्जा लेने जायेंगे। यह पत्र पाने पर आखिर वे खुद आश्रम मे आकर समझौता करके गये और किसानो को अपनी जमीन मिल गयी।

इस प्रकार अनेक गाँवों के किसानों की जमीन छुड़वा दी गयी। ज्यादा काम समझौते से ही हुआ, किन्तु कुछ मामलों मे कानून का भी सहारा लेना पड़ा।

बाद में राज्य में जब भूमि-सुधार-कानून लागू हुआ, तब भी जमींदारों ने उसकी कई धाराओं का उपयोग अपने हित में करके गरीब किसानों को ठगना और लूटना शुरू किया। भूमि-सुधार-कानून के नियमों में से दो ऐसे थे : मान लीजिये, एक बीघा जमीन का महसूल २ रुपया है। अगर यह किसान महसूल की पाँचगुनी रकम याने १० रुपये जमीन-मालिक को देता रहता है, तो उस जमीन पर से उसको निकाला नहीं जा सकता और फसल किसान की रहेगी। दूसरा नियम था कि कोई टेनेंट तहसीलदार से कह दे कि मैं तो भूमिवान के पास वार्षिक बँधे रुपये से काम करता हूँ या यह कह दे कि मेरे पास दूसरी जमीन है और यह जमीन भूमि मालिक के पास रहने दी जाय, तो फिर उस जमीन पर टेनेंट का कोई हक नहीं रहता।

पहले नियम के अनुसार भूमि-मालिक को फसल के दो तिहाई हिस्से के बजाय लगान की पाँचगुनी रकम ही मिलती थी और इसलिए सरकारी कर्मचारियों से साठगाँठ करके किसानों में ऐसी हवा फैलायी कि इस तरह से सरकार तो उससे जमीन ही हथिया लेगी। इसलिए तुम जो हिस्सा देते हो वह देते रहो। दूसरे नियम का लाभ उठाकर टेनेंट्स को फुसलाया कि तुम तो हमारी जमीन जोतते ही हो, हम तुमसे कहाँ ले जानेवाले हैं ? तुम तहसीलदार के सामने कह देना कि वह जमीन मालिक के नाम ही रहे। इस तरह फसल का हिस्सा लेते रहने की और अपने नाम जमीन कायम करने की तरकीब जोर से चालू हो गयी और जो लोग उनके अनुकूल नहीं हुए, उनको बेदखल कर दिया।

लोग आश्रम में आने लगे। इस प्रश्न पर ढिलाई नहीं करनी चाहिए, यह हरिवल्लभ भाई को स्पष्ट दीख पड़ा। उन्होंने गाँव-

गाँव जाकर सभाएँ कीं और भू-सुधार कानून के बारे में समझाया। थोड़े दिनों में तो इस समस्या को लेकर लोक-संगठन खड़ा हो गया। उसमें यह निर्णय किया गया कि अब से जमींदारों को फसल का हिस्सा न दिया जाय, कोई भी किसान, जो जोतता है वह जमीन छोड़े नहीं और अगर जमींदार जबरदस्ती छुड़वाता है, तो उस जमीन पर कोई काम करने न जाय। संगठन ऐसा मजबूत रहा कि आखिर जमींदारों को झुकना पड़ा। उदाहरणार्थ, एक गाँव से हरसाल १२००० रुपये की फसल हिस्से के रूप में चली जाती थी। अब नियम के अनुसार १२२५ ही रुपये देना तय हुआ। शुरू में तो जमींदार ने माना नहीं। तो गाँववालों ने यह रकम आश्रम में जमा करा दी और आखिर थककर जमींदार खुद आकर आश्रम से वह रकम ले गये। यह तो एक ही गाँव की बात हुई, किन्तु इस संगठन के बल से इस क्षेत्र के सौ गाँवों को लगभग साढ़े दस लाख रुपये की बचत एक ही साल में हुई।

दूसरी बात यह ध्यान में आयी कि इस क्षेत्र में १०० प्रतिशत से लेकर २०० प्रतिशत तक और कभी कभी तो ३०० प्रतिशत तक किसानों की कमर तोड़ देनेवाला सूद लिया जाता है। ऐसे राक्षसी सूद की वजह से एक के बाद एक किसान की जमीन व्यापारियों के हाथों में चली जाती थी और किसान बेजमीन बनता जा रहा था। हरि भाई ने जमीन के प्रश्न की तरह इस प्रश्न में भी गहरी रुचि ली और एक एक साहूकार से मिलकर सैकड़ों मामले निपटाये और सैकड़ों किसानों को उनके पंजे से छुड़ाया।

तीसरा प्रश्न था अफसरशाही का। इस प्रदेश की हर तहसील में पटवारी से लेकर तहसीलदार तक, छोटे पुलिसवाले

से लेकर दारोगा तक और फारेस्ट के बीटगार्ड से लेकर रेन्जर तक सब खुद को अपने-अपने क्षेत्र के राजा समझते थे। जमींदार और व्यापारियों के साथ मिलकर उन्होंने ऐसा विषचक्र खड़ा किया था कि उसमें से छूटना मामूली किसान के बूते के बाहर की बात थी। भाग्य से कहीं कोई एकाध अच्छा अफसर आ भी गया, तो या तो धीरे-धीरे उसको इस विषचक्र में फँस जाना पड़ता, या तो उसको थोड़े समय में भगा दिया जाता या वह स्वयं भाग जाता। इस विषचक्र में कितने गरीब घर-बाद हुए, कितने पीसे गये, कितने खतम हुए उसका कोई अंदाज नहीं!

शोषित-उत्पीड़ित
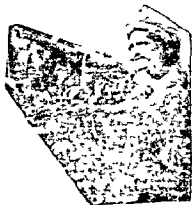
दीन-हीन निःसहाय किसान

इस विषचक्र को कैसे तोड़ा जाय यह हरिवल्लभ भाई के सामने बड़ी समस्या थी। जमींदार और व्यापारियों का तो उन्होंने मुकाबिला किया। अब अफसरशाही के साथ उनको अपनी शक्ति आजमानी थी।

बाडकाघला गाँव के नजदीक के जंगल में से सरकार घास कटवा रही थी। उस साल बारिश अच्छी नहीं थी, सो सैकड़ों लोग मजदूरी करने जाते थे। लोगों की गरज का फायदा उठाकर वहाँ के कर्मचारी अपने खाने के लिए उनसे दूध, घी, मुर्गियाँ, बकरे बिना पैसे मँगवाते थे। जो नहीं ला सकता था, उसको काम

पर से निकाल देते थे। इतने से संतोष नहीं होता, तो जब चाहे तब किसीको भी गाली बक देते, चाहे जब हँसिये छीनकर घर भगा देते या शरीर की कमान बनाकर कड़ी धूप में घण्टों खड़े रखते और कमर पर रखा हुआ पत्थर अगर नीचे गिर जाय, तो जोर से चाबुक लगाते! इससे बहनें भी छूटती नहीं थीं।

कुछ मजदूरों ने यह खबर हरिवल्लभभाई तक पहुँचा दी। वे वहाँ गये और सभा की। लोगों ने उनके नेतृत्व मे विद्रोह पुकारा, दूसरी ओर जिलाधीश के सामने बात रखी। सबने काम करना छोड़ दिया। तुरन्त डेप्युटी कलेक्टर और जंगल के प्रमुख अधिकारी वहाँ आये और वहाँ के चारों कर्मचारियों को ससपेन्ड कर दिया। किन्तु घास तो कटवाना ही था, तो उन्होंने फिर से सबको बुलवा भेजने की हरिवल्लभ भाई से माँग की। हरिवल्लभ भाई ने अपने साथ के कुछ किसानों को लोगों के पास भेजा। कुछ ही घंटों में तो उनके गाँवों के हजारों लोग, दीपोत्सव का त्योहार होते हुए भी, जमा हो गये। यह लोकशक्ति देखकर वे बड़े अफसर तो दंग रह गये। ऐसे तो उनके सामने कई प्रसंग आये कि जिसमें सरकारी अफसरों के अन्याय के विरुद्ध लड़ना पड़ा, किन्तु जब-जब ऐसे मौके आये, तब-तब मार्गदर्शन के अनुसार हिम्मत के साथ काम करने मे लोग पीछे नहीं रहे। और वैसे प्रसंगों मे उनकी शक्ति निखरती गयी।

किसानों की जमीन वापस दिला दी, दुबारा हाथ से जाने नहीं दी, साहूकारों के ब्याज से किसानों को मुक्त कराकर उनके पंजे से छुड़वाया और सरकारी कर्मचारियों के अन्याय के सामने मोर्चे लगाकर उससे बचाया, तो लोग आपस में बात करने लगे कि भाई जमीन भी दिलवा सकता है, साहूकार से छुड़वा सकता है और अफसर से भी बचाता है। इन तीनों चीजों से लोगों को

जो सीधा लाभ होनेवाला था, वह तो हुआ ही, परन्तु उसका एक और बड़ा आनुषंगिक परिणाम भी आया। पिछले समय जमीन के प्रश्न को लेकर यहाँ साम्यवादी संगठन खड़ा हो गया था, सैकड़ों घरों में स्टालिन और माओ के फोटो लग चुके थे, एक साम्यवादी नेता की अगवानी में १००० से भी ज्यादा लोग जेल जा चुके थे, फिर भी भूमि मिलने की कोई आशा नहीं दीखती थी। लेकिन उस नये तरीके से किसानों को अपनी जमीन मिलने लगी, इसलिए उस सारे साम्यवादी संगठन पर अपने-आप पानी फिर गया।

यही नहीं, बाहर से होनेवाले उपर्युक्त त्रिविध शोषण के अलावा उनमें अदरूनी निहित स्वार्थ, शोषण, झगड़े और कुरीतियाँ ऐसी जम गयी थीं कि जीवन को घुन की तरह खा रही थीं।

यह २४ घंटे का सेवक। आधी रात को दूर देहात का कोई आदमी आकर आवाज देता, तो भाई उसी समय उठ जाता, आनेवाले की पूरी बात सुनता और तत्काल अपनी लाठी लिये घने अन्धेरे में उस आदिवासी के पीछे निकल पड़ता।

यह लोगों के पीछे जाता रहा, इसलिए आज लोग उसके पीछे आते है, उसके इशारे पर चलते हैं। उसने भूदान की बात कही, लोगों ने भूदान किये। उसने ग्रामदान की बात कही, लोगों ने ग्रामदान किये। 'रंगपुर क्षेत्र में दूर-दूर के लोग खुद ग्रामदान देने क्यों आते हैं ?' पूछनेवाले साथियों के लिए यह जवाब है।

अपने मार्गदर्शक के नेतृत्व में त्रिविध, नहीं अनेकविध शोषण से मुक्ति पाने की लोगों के मन में स्फूर्ति जगी और उस सामूहिक चेतना से भरकर वे ग्रामदान करने आये और आते ही रहे। शोषणमुक्ति के ये कार्यक्रम ही यहाँ के सामाजिक जीवन की और सामूहिक अभिक्रम की प्रमुख प्रेरणा रही और उसी वजह से गुजरात का प्रथम प्रखंड-दान यहाँ हुआ है।

निर्भयता की मशाल

आश्रम में एक आम के पेड़ के नीचे बैठकर हरिवल्लभ भाई और हम गपशप कर रहे थे, इतने मे १५-१७ किसान आकर सामने बैठ गये।

'कैसे आये ?' हरिवल्लभ भाई ने पूछा।

'हमे ग्रामदान करना है।'

'ग्रामदान की शर्त मालूम है न ? आप गॉव के बाहर जमीन वेच नहीं सकेंगे।'

'हम नहीं वेचेंगे।'

'सहकारी विभाग से चाहे जितना कर्ज मिलेगा, इस भावना से ग्रामदान मत करना।'

'ठीक है, अच्छी बात है।'

'कहो, और कुछ पूछना है ?'

'किसीकी थोडी बहुत जमीन साहूकार के यहाँ रेहन हो तो वह ग्रामदान में शामिल हो सकता है क्या ?'

'वे लोग भी जरूर शामिल हो सकते हैं, परन्तु उनकी जमीन छूट ही जायगी, ऐसा मानकर शामिल न हों।'

खरेडा गाँव के उन लोगो ने ग्रामदान-पत्र पर हस्ताक्षर किये। बाकी ग्रामवासियों से दस्तखत कराने के लिए दानपत्र ले गये।

दूसरे दिन सवेरे, कुछ ग्रामदानी गाँव के लोग, संस्था के कार्यकर्ता और जीवनशाला के छात्रों की टोली—जिसमें लगभग ५० भाई-बहन थे—ग्रामदान-प्राप्ति के लिए निकल पड़ी। ८ मील

तय करके टोली पहले पड़ाव पर पहुँची। सब लोग नदी पर स्नान करने गये और मैं कुछ विद्यार्थियों के साथ उनके घर के बारे में बातचीत कर रहा था। मई का महीना था। दोपहर के समय लू

गाँव की धरती गाँव का राज

सरेडा के किसान अपनी जमीन के दानपत्र पर हस्ताक्षर करते हुए

आग बरसा रही थी। उतने में पसीने से लथपथ किसानों की एक बड़ी टोली आयी और आते ही पूछा : 'भाई कहाँ हैं ?'

'क्या काम है ?' एक बड़े छात्र ने पूछा।

'ग्रामदान देने आये हैं।'

पचीस मील दूर के, भरुच जिले के बरार गाँव के लोग ग्रामदान करके चले गये।

कभी-कभी ग्रामदान करनेवालों को बहकाने, धमकाने या डराने की कोशिश लुके-छिपे की जाती है, फिर भी आज सन् १९६६ में उस (१९५६) साल की तुलना में बहुत बड़ा अन्तर हो गया है।

सन् १९५६ के सितम्बर की बात है। हरिवल्लभ भाई एपेण्डिसाइटिस के ऑपरेशन के लिए रंगपुर आश्रम से शहर जा रहे थे। उनको बिदा करने ३० ४० गाँवों के लोग जमा हुए थे। उस दिन हरिवल्लभ भाई ने बात रखी कि 'अभी तक गांधी के गुजरात में ग्रामदान हुआ नहीं, हमारे यहाँ से शुरुआत होनी चाहिए।' गजलावांट गाँव के लोग सभा से अलग होकर बगल के कमरे में गये और थोड़ी देर में आकर अपने गाँव का ग्रामदान जाहिर किया। वह गुजरात का पहला ग्रामदान था। उसकी खबर फैलते ही बाहर के लोगों पर मानो बिजली टूट पड़ी। बाहर के बड़े जमीनवाले, साहूकार, सरकारी कर्मचारी और जाति के कुछ मुखिया—सबने ग्रामदान तोड़ने की भरसक कोशिश की। 'अब तुम लोगों की जमीन चली जायगी, तुम लोगों को कर्ज नहीं देंगे, तुम्हारे लड़के-लड़कियों का ब्याह नहीं होगा', आदि कई डर दिखाये, परन्तु गजलावांट के लोग अपने निश्चय पर डटे रहे, किसीकी एक न चली। इसी तरह शुरुआत के ग्रामदान मातोरा, रुड़किया आदि पर भी बहुत बीती और शुरू-शुरू में उन निहित स्वार्थ के लोगों की ओर से काफी सहन करना पड़ा। कहीं-कहीं लोकशक्ति संगठित करके लड़ना भी पड़ा। इन गाँवों को निर्भयता की मशालें नहीं तो और क्या कहा जाय? इनमें से कुछ मशालों ने जो प्रकाश फैलाया है, उसकी तरफ निगाह डालें।

गजलावांट

२ सितम्बर सन् १९५६ को ग्रामदान का संकल्प हुआ और ११ सितम्बर विनोबा-जयंती के दिन विधिवत् अर्पण किया गया। गाँव के ३ भूमिहीनों में ६॥ एकड़ भूमि का वितरण भी उसी दिन किया गया। उन लोगों को रहने के लिए माया नहीं था, तो ग्राम-

जनों ने मिलकर उन तीनों के लिए सामूहिक श्रम से तीन छोटे-छोटे मकान बना दिये।

गैरहाजिर भू-स्वामी (ॲबसेंटी लैंडलार्ड), व्यापारी भाइयों ने भी पिछले सालों में इस गाँव को कर्ज दे-देकर ७५ एकड़ जमीन अपनी बना ली थी। वे भी ग्रामदान में शामिल हुए और ग्रामसभा में तय हुआ कि गाँव के किसान जमीन जोतें और उनको फसल का एक निश्चित हिस्सा दिया जाय। बीच में उनकी नीयत में थोड़ा फरक हुआ और वे जमीन का कब्जा लेने के लिए मामला कोर्ट में ले गये। मजिस्ट्रेट ने बता दिया कि ग्रामदान की जमीन को तुम वापस नहीं ले सकते हो। उनको भी अपनी गलती महसूस हुई और अब वे सबके साथ हैं। वे दोनों जब मुझसे मिले तब कहते थे कि सुलभ ग्रामदान आसान चीज है और उसमें हमारी सुरक्षा है।

इस गाँव का किसान दसरिया भाई नजदीक के कस्बे के एक व्यापारी जमींदार का टेनेंट था। ग्रामदान होने के बाद उस व्यापारी ने दसरिया भाई को उस जमीन से बेदखल कर दिया। गाँव ने इस अन्याय का मुकाबिला करने का निर्णय किया। सत्याग्रह किया गया, उपवास हुए और ४ एकड़ के खेत में से २ एकड़ जमीन कायमी हक के रूप में वापस मिली।

गाँव के सभी ३० पट्टेदारों की कुल १७५ बीघा जमीन ग्राम-स्वराज्य सहकारी मंडली के नाम पर चढ़ गयी है। अभी गुजरात में ग्रामदान एक्ट बना नहीं है, जब एक्ट बनेगा तब ग्रामसभा के नाम पर चढ़ जायगी। इस गाँव की जमीन काफी उपजाऊ है, इसलिए इर्दगिर्द के देहातों का लगान प्रति एकड़ डेढ़ से दो रुपये तक है और यहाँ का लगान प्रति एकड़ तीन से साढ़े तीन रुपये है।

४० एकड़ जमीन मे से कंकड़ पत्थर निकाले और मेड़ें बनायी गयीं।

ग्रामदान के बाद अच्छे बीज-खाद, नये औजार और कार्यकर्ताओं की सलाह-सहायता से खेती का उत्पादन तो बढ़ा ही, परन्तु अब तक पर्व-त्योहार के लिए गेहूँ तो बाहर से ही लाना पड़ता था। इधर कुछ सालो से स्थिति थोड़ी अच्छी हुई, शक्ति और समझ बढ़ी और बाहर से सहायता भी मिली, तो गाँव के लोगो ने नदी मे से एक गहरी लंबी नहर खोदकर उस पर १८ हॉर्सपावर का इंजन बिठाकर थोड़ा-थोड़ा गेहूँ पैदा कर लिया। इस प्रकार जिंदगी में पहली बार अपने खुद के गेहूँ के लड्डू-लपसी खाने का आनन्द इस साल की होली मे लोगो ने उठाया।

पहले हरएक किसान हरसाल पाँच-सात सौ रुपये का कर्ज लेता था, आज अपनी खेती अच्छी करने के लिए वह हजार-बारह सौ का कर्ज लेता है, परन्तु उस समय सारा कर्ज साहूकारों से लेना होता था, आज करीब-करीब पूरा कर्ज अपनी सहकारी मंडली से मिल जाता है। साहूकारों को ७५ से १०० प्रतिशत सूद चुकाना पड़ता था, अब ९॥ प्रतिशत ही सूद देना पड़ता है।

सन् १९५० के पहले हरसाल गॉव के आपसी झगड़ों के १०-१२ मामले बाहर जाते थे। सन् '५० से '५६ के बीच हरिवल्लभ भाई इस क्षेत्र मे थे, तो झगडे कम हो गये, और जो कुछ होते थे, वे उनके द्वारा निपटा लेते थे। अब ग्रामदान के बाद एक मुकदमे के अलावा, जो ॲबसेन्टी जमींदार कोर्ट में ले गये थे, गाँव की ओर से कोई मामला कोर्ट मे नहीं गया। छोटे झगड़े गॉव में ही निपटा लेते हैं और कभी कुछ खास बात हुई, तो हरिवल्लभ भाई के पास जाकर सुलझा लेते हैं।

गाँव मे पहले शराब बनती थी। ज्यादातर लोग पीते थे। अब बनना तो बंद ही है, लेकिन १०-१२ व्यक्ति शादी-त्योहार के मौके पर थोड़ी पी लेते हैं।

अंबर और किसान चरखे के वर्ग चले। हरएक घर का एक आदमी कातना जानता है, किन्तु बाद मे प्रयोग समिति ने चरखे वापस मँगा लिये। लोग चाहते हैं कि कताई का काम चले और उससे उनकी आजीविका मे कुछ पूर्ति हो।

गाँव मे ५ पक्के और २ कच्चे कुएँ बने। ५ बैलो की सहायता दी गयी। १ पक्का ग्रामघर बना और १५ लोगों ने पुराने घर की मरम्मत कर ली। गाँव के १२ बच्चों ने आश्रम की जीवनशाला मे तालीम पायी, एक युवक ने इंजन चलाना सीखा। पहले बाल-वाड़ी चलती थी, आजकल बंद है।

योजना सोची गयी है कि पानी की टंकी बने, खेतों में पाइप लाइन बिछे और अगले साल से ही १२० एकड़ जमीन को पानी पहुँचे। साथ-साथ हरएक किसान से जमीन के २०वें हिस्से के अनुसार जमीन के पैसे इकट्ठे करके उसमे से एक जगह १० एकड़ जमीन खरीदकर उस पर सामूहिक खेती करने की बात भी सोची गयी है।

इस तरह गुजरात के प्रथम ग्रामदान गजलाचांट का जीवन पनप रहा है, आगे बढ़ रहा है।

मातोरा

हमने सुना कि 'रंगपुर मे एक बाबा आया है, जो डी० वाई० एस० पी० से भी खेत मे काम कराता है, बर्तन साफ कराता है। यह सुनकर दारोगा से भी डरनेवाले हम लोगों को बड़ा आश्चर्य

हुआ। मैं अपने एक साथी को लेकर उनको देखने निकला। हिरन नदी के पानी में हम चल रहे थे कि देखा, सामने किनारे पर वह बाबा और डी० वाई० एस० पी० कपड़े का ढेर लगाकर धो रहे हैं। हमारे अचरज का ठिकाना नहीं रहा। मन में हुआ कि इतने बड़े अफसर से कपड़े धुलवानेवाला आदमी कितना बड़ा होगा? बाद में हमारा परिचय बढ़ा और उनके कहने पर हम गाँववालों ने ग्रामदान किया।' मालोरा के समझदार, सेवाभावी और तेजस्वी अग्रणी दलाभाई अपने गाँव की बात सुना रहे थे।

ग्रामदान के बाद गाँव में दो भूमिहीन थे। उनको ४ एकड़ जमीन दी गयी। ७ व्यक्तियों की २३ एकड़ ३० गुंठा जमीन बाहर गाँववालों के पास रेहन थी, जिसकी वजह से वे भूमिहीन जैसे ही बन गये थे। उनकी जमीन छुड़वायी गयी। शुरू में यह जमीन-ग्राम-स्वराज्य मंडली ने अपने पास रखी और उसमें पैदावार लेकर उसका कर्ज चुका दिया और बाद में जमीन किसानों को दे दी। गाँववालों ने अपने खेतों में से पत्थर चुनकर उसकी मेड़ें बनायी हैं। नवनिर्माण मंडल की सहायता और गाँववालों के श्रम से दो कुएँ बनाये गये। गाँववालों ने मिलकर १० बीघा नयी जमीन बनायी।

"ग्रामदान होने के पहले गाँव में शराब की दो भट्ठियाँ थीं। नशाबन्दी का कानून बना तो घर घर में भट्ठी हो गयी। चूँकि लोग डरते थे इसलिए छिपकर पीते थे, तो कम ही पी जाती थी, फिर भी उससे थोड़ा लाभ ही हुआ। लेकिन ग्रामदान होने के बाद समझाने से काफी मात्रा में शराब बन्द हो गयी।"

"ग्रामदान से रेहन की जमीन छूटी, झगड़े खत्म हुए, एकता बढ़ी, पुलिस और बनिये का जुल्म बन्द हो गया। अम्बर चरखा

चलाना सीखा, परन्तु वह यहाँ से उठा लिया गया, यह ठीक नहीं हुआ। वह रोजी का साधन था। हमारे यहाँ कपास होती है, तो हमारा कपड़ा भी बन जाता और ऐसे सूखे वर्ष मे (इस साल पानी कम बरसा था) हमारे लिए उसका बड़ा सहारा रहता।"

"पहले हमारे गाँव के लोग बीमारी होने पर जंतर मंतर करवाते थे, अब ज्यादातर लोग दवाखाने जाने लगे हैं।"

"ग्रामदान से हमारी स्थिति मे थोड़ा बहुत फरक हुआ, किन्तु आधे लोगों के पास एक-एक बैल है, और बीच-बीच मे इस साल की तरह सूखा भी पड जाता है, तो हमे सड़क, रास्ते आदि पर मजदूरी के लिए जाना पड़ता है। सालभर का अनाज खेत मे पैदा नहीं होता है, तो मजदूरी करके बाहर से अनाज खरीदना पड़ता है। अब मजदूरी के पैसे उतने बढ़े नहीं और अनाज इतना महँगा हो गया है। महँगाई हमारी कमर तोड़ देती है। महँगाई को रोकने का कोई उपाय नहीं है?"

"अब हम लोग हमारे बड़े कुएँ पर इंजन लगानेवाले हैं। इंजन लगेगा, तो हमारे गाँव मे सिंचाई होगी और अनाज की पैदावार भी बढ़ेगी।"

"हमारे गाँव के हम आठ आदमी सेवाग्राम-सम्मेलन मे यहाँ से पैदल चलकर पहुँचे थे। वहाँ भी हम आजू-बाजू के देहातो मे घूमे थे और ग्रामदान की बात फैलायी थी। बाद मे उन गाँवो के लोगो ने भाई के पास जाकर ग्रामदान किये।"

ग्रामसभा मे बातचीत करते हुए, गाँव के भाई-बहनो के मुँह से ये बातें सुनने को मिलीं।

●

पाँच पाँच, दस-दस और पन्द्रह-पन्द्रह के झुंड मे चारों दिशा से आश्रम की ओर उस दिन सुबह से ही लोग आने लगे। कोई पैदल आ रहे हैं, कोई बैलगाड़ियो मे आ रहे हैं, तो कोई घोड़े पर आ रहा है। दोपहर तक तो आश्रम भर गया। आम्रछाया के नीचे अलग-अलग कई टोलियाँ बैठी हैं। कोई टोली बात कर रही है, कोई नाश्ता कर रही है, तो कोई विश्राम कर रही है। बच्चे हैं, बूढ़े भी हैं, पुरुष हैं, स्त्रियाँ भी हैं। लाल, हरी, पीली साड़ियाँ और चाँदी के चमकीले 'कड़े' (मोदे वलय) और मालाएँ पहने अपने सुकोमल शिशुओं को गोद में लिये कई युवतियाँ भी आयी हैं।

वनवासियों का बिना फीस का वकील

हरिवल्लभ परीख एक मामले को निपटाते हुए अपनी लाक्षणिक मुद्रा में

सबके मन में कुछ-न-कुछ चल रहा है, यह सभी के गांभीर्य और आतुरताभरे चेहरे पर से दिखायी पड़ता है। किसी-किसीके वदन पर वेदना की भी छाया नजर आती है।

दो बजे तक दूर-दूर से जो आनेवाले थे, वे सभी ग्रामवासी आ गये और सभी टोलियाँ आम्रछाया से उठकर आश्रम के बीच की अमराई के नीचे के विशाल चबूतरे पर आ बैठीं।

ठीक ढाई बजे सिर पर सफेद कपड़ा बाँधे, तन पर भगवा कुर्ता और लुंगी पहने निःशंक कदम रखते हुए हरिवल्लभ भाई अपने कमरे से निकले। उनके साथ बाहर के कई अतिथि भाई-बहन भी थे। उन्होंने जनसमूह के सामने आकर अपना-अपना आसन लिया। हरिभाई के सामने एक छोटा-सा टेबुल, उस पर दो फाइलें, थोड़े कागज, लकड़ी का पैड और पानी का गिलास था।

मामलों का काम शुरू हुआ।

'छगालाल सिंह' नाम पुकारा गया।

छगा मैदान में आ गया।

'पाँचली बहन।'

'भाई, एक बार मुझे घर से बाहर कर दिया था। मेरा भाई लौटाने के लिए मुझे लेकर गया तो मुझसे कहा : 'वापस चली जा। यहाँ तुम्हारी जरूरत नहीं है।'' बाद में एक दिन मेरे पेट-पर जोर से लात मारी। मुझे बहुत दिन तक दर्द रहा।' पाँचली की आँखें सजल हो गयीं।

'कुछ काम नहीं करती है।' पीछे बैठा हुआ छगा का पिता बीच में बोला, तो उसको चुप कर दिया गया।

'छगा, तुम्हें रखना है ?'

'रखूँगा।'

'तो फिर मारते क्यों हो ?'

'अब नहीं मारूँगा।'

'तुम्हारी क्या इच्छा है ?'

'मैं उसे अच्छी नहीं लगती।'

'क्यों ?'

'वह कहता है तू नाटी है।'

गंभीर वातावरण होते हुए भी सारा समूह हँस पड़ा।

'मनुष्य छोटे-बड़े कद का तो होता ही है। मनुष्य के गुण देखने चाहिए, उसकी लंबाई नहीं,' हरिभाई ने छगा की ओर देखकर, फिर भी सबको संबोधित करते हुए कहा।

'भाई, इसको अब मैं नहीं मारूँगा।'

'अगर फिर से मारा तो ?'

'आप चाहे जो सजा दीजिये।'

पाँचली ने भी अब अपने पिता के घर से छगा के पास लौट आना स्वीकार कर लिया।

दूसरा मामला।

३५ साल का कलजी और ३० साल की समतु दोनों सामने आये। दोनों की गृहस्थी दस साल से चल रही है और तीन बच्चे हैं। एक छोटा सा बच्चा तो उसकी गोद में ही था।

समतु कहती है कि वह नहीं चाहता कि मैं उसके घर में रहूँ। मुझे खाना नहीं देता, कपडा नहीं देता और मारता रहता है। फिर भी अगर रखे तो मैं रहना चाहती हूँ। तीन बच्चेवाली, मैं कहाँ जाऊँगी? एक बार तो हमारे पाँच गाँवों के मुखियों ने इकट्ठा होकर मुझे भेजा था, तो भी मुझे निकाल दिया।

कलजी: मैं उसको मारता हूँ, यह मेरी गलती है, परन्तु एक दिन मैं अपने ससुर के गाँव बैल खरीदने गया, तो मेरी सास मुझे मारने दौडी और मेरे ससुर ने मुझे गधा कहा। अब वह अपनी लडकी गधे को दें, मुझे नहीं चाहिए।

'मुझे खाना नहीं परोसती है।' कलजी के पिता ने शिकायत की।

'भाई, मुझे रात को दिखता नहीं, इसलिए मैंने कहा कि रोटी पेटी में रखी है, ले लीजिये।' समतु ने खुलासा किया।

ससुर समतु को अपने यहाँ लाने के बिलकुल पक्ष में नहीं था। पति की इच्छा भी वैसी ही दीखती है। किसी शर्त पर वह समतु को रखने को तैयार हो भी जाय, तो भी वह पिता की इच्छा का उल्लंघन कर सके, ऐसा दिखता नहीं था।

यह मामला भी ज्यूरी (पचों) को सौंपा गया और उन्होंने तुरन्त आकर निर्णय दिया कि कलजी के पिता का दावा✲ रद्द और उसके ऊपर से ५१ रुपये दंड। शुरू में तो कलजी का पिता नहीं

✲ कन्याशुल्क को गुजरात के कुछ हिस्सों में 'दावा' कहते हैं।

माना, परन्तु बाद में उसे मानना पड़ा। कलजी के पिता ने ५१ रुपये टेबुल पर रखे और कलजी तथा समतु आज से एक दूसरे से स्वतंत्र हुए। तय हुआ कि सब बच्चे कलजी के पास रहेंगे। यह छोटी बच्ची जब अन्न खाने लगे, तब कलजी उसको सँभाल ले। अब समतु कहीं भी शादी करने को स्वतंत्र थी। कलजी और समतु खड़े हो रहे थे और छोटी बच्ची जोर से चिल्ला रही थी।

(३) जंगु और शनी का मामला चल रहा था।

'भाई, पहले भी उसने मुझे मारा था, तब आपने ही सुलह करवायी थी। लेकिन अब भी बराबर मारता रहता है। मैं वहाँ कैसे रह सकूँगी ?'

'तो उस समय के फैसले का कागज होगा।' कहकर भाई ने फाइल से पुराना मामला निकाला। उसमें लिखा था कि अगर फिर से मारूँगा, तो मेरा दावा रद्द हो जायगा और मेरा कोई हक बाई शनी पर रहेगा नहीं। जंगु ने गलती स्वीकार की और भूल की माफी माँगी। उस फैसले में यह भी लिखा था कि फिर से अगर मारते हैं, तो पिता के घर पर जाने के बजाय सीधे आश्रम में आकर कहना। पूछने पर शनी ने तुरन्त बताया कि उसको इतनी सख्ती से मारा था कि घाव हो गया और खून निकला तो दवाखाने जाने की जरूरत थी, परन्तु पहले वह आश्रम में आयी। हरिभाई बाहर थे तो आश्रम के कार्यालय में बताकर ही अपने भाई को लेकर दवाखाने गयी। और अब फिर से मार पड़ी है।

'भाई ! मुझे बाद में बड़ा पछतावा होता है, परन्तु वह सामने जब बहुत जबान लड़ाती है, तो बड़ा गुस्सा आता है और हाथ उठ जाता है। वैसे वह बहुत अच्छी है।' जंगु ने आत्म-निवेदन किया।

जंगु और शनी अपना-अपना निवेदन करते जा रहे थे, उसी समय शनी की गोद मे बैठा हुआ दो साल का बच्चा उसकी गोद से उतर गया। उसने जंगु की जेब मे हाथ डालकर उसमें से गुड़ की कुछ डलियाँ निकालीं। उसने एक डली अपने मुँह में डाली, दूसरी डली अपने पिता के मुँह मे सरका दी और अपनी माँ के पास जाकर एक डली उसके मुँह मे रखने की कोशिश की, परन्तु समाज के संकोच से शनी ने अपना मुँह नहीं खोला। बच्चा रोने लगा और माँ के मुँह मे मीठी डली डालने के लिए जिद करने लगा। तब माँ को भी आखिर पुत्र का स्नेह स्वीकार करना पड़ा। इस पावन दृश्य ने वहाँ की हवा को मधुर और सुवासित कर दिया। सारे जन-समूह के चित्त की प्रसन्नता हरएक के चेहरे के सुरम्य आनंद के रूप मे झलक रही थी।

दोपहर ढाई बजे काम शुरू हुआ था और अब घड़ी बता रही है कि रात के सवा नौ बजे हैं। लगातार पौने-सात घंटे कार्यवाही चली। १० मामले हाथ मे लिये। उनमे ९ निपटाये गये और एक को बाद में अच्छी तरह सुलझाने के लिए रखा। अब काम पूरा होने को था कि कुछ लोग जिन पर अपने गाँववालो को हैरान करने का आरोप था, दो शराबियो को पकड़कर लाये। एक पर तो अभी नशे का थोड़ा असर भी था। दोनो को बिठाकर समझाया। उन्होंने पड़ोसियों को परेशान करने का गुनाह कबूल किया, परन्तु बताया कि उनको आजकल कोई काम पर नहीं बुलाता, इसलिए बेकार हैं। दोनो को काम देने का तय किया गया।

अब गुड़ बाँटना शुरू हुआ। गुड़ बाँटने पर ही सब मामलों को लोक-अदालत की याने इस लोक-पंचायत की लोकसमूह की मंजूरी मिली मानी जाती है। भरपूर गुड़ बाँटा गया।

जिन्होंने यह देखा है कि गाँवों के आपसी झगड़ों में गाँव के या जाति के मुखिया कितना-कितना पैसा खाते हैं, लोगों को फँसाने के लिए कैसे-कैसे तरीके आजमाते हैं, और झगड़ा बढ़ाने के लिए कैसे-कैसे षड्यंत्र रचते हैं या झूठे इल्जाम लगाकर अपराधी ठहराते हैं—

जिन्होंने देखा है कि मामूली-सा झगड़ा होने पर, दोनों पक्षों को पुलिस कितनी बेरहमी से पीटती है, कैसे-कैसे सताया जाता है, उनकी खेती के एकमात्र आधार—बैल—को बेचकर या घर में बचा-खुचा अनाज आदि बेचकर अफसरों को कैसे संतुष्ट करना पड़ता है—

और जिन्होंने देखा है कि दो किसान अपने खेती की सीवानी की १० डिसमिल की पट्टी के झगडे पर २ एकड़ जमीन की कीमत के बराबर खर्च कर डालते हैं, जिन्होंने काले-काले कोटवाले वकीलों की भीड़ में खोये देहाती को देखा है, जिन्होंने कोर्ट की लंबी, पेचीदा, खर्चीली और परेशानी से भरी परिपाटियों में जकड़े हुए साधारण देशवासी को देखा है, जिन्होंने ऐसे भी दुर्बल शख्स देखे हैं कि अदालत का निर्णय अपने हक में होने पर भी उसका लाभ नहीं उठा पाते हैं, तो उनको यह लोक अदालत की सीधी-सादी, सहज, स्वाभाविक, शिक्षा-सहयोग की सुन्दर कार्यवाही, उसकी प्रभावकारी प्रक्रिया और न्याय पद्धति की नवीनता देखकर बहुत खुशी होगी। आनंद से उनका दिल नाच उठेगा। क्योंकि यहाँ सामान्य नागरिक निर्भय है, वह निःसंकोच अपनी बात रख सकता है। यहाँ गरीब को आश्वासन है कि न्याय प्राप्त करने के लिए उसको खर्च और उसके लिए कर्ज नहीं लेना पड़ेगा और महीनों तक कोर्ट की तरह दौड़ धूप नहीं करनी पड़ेगी। यहाँ किसी एक की हार

लोक अदालत : एक पेचीदा मामले की सुनवाई हो रही है।

एक महिला
अपना मसला पेश
कर रही है

लोक अदालत में

जूरी
विचार करते
हुए
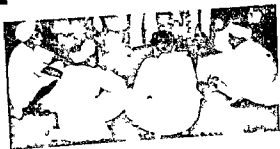
फैसले के बाद
एक महिला
अपने गहने
निकलवाती हुई

और दूसरे की जीत नहीं होती कि जिससे एक का अहंकार और दूसरे की हीनता बढ़े। आम लोगों को विश्वास है कि यहाँ निर्दोष को दोषी नहीं ठहराया जायगा और दोषी को भी क्षमा माँगकर छूटने का, सुधरने का अवसर है। सामान्य स्त्री को भरोसा है कि यहाँ उसके दिल की भावनाओं को, उसकी आशा-आकांक्षाओं को समझकर उचित न्याय मिलेगा। मामले के फैसले के अनुसार पैसे और गहनों की लेनदेन भी उसी समय खुली अदालत में सबके सामने हो जाती है।

न्याय के लिए आतुर

लोक अदालत में बैठी हुई एक युवती

इसलिए यहाँ लोग दौड़े-दौड़े आते हैं। हर महीने एकाध दिन बड़ा जमघट लगता है। उसमें सैकड़ों लोग तो लोक-अदालत की लोक-शिक्षा के पाठ पढ़ने की प्यास से और अपने-अपने रिश्तेदारों के न्याय को अपनी आँखों से निहारने की लालसा से आते हैं। इतना ही नहीं, इस अदालत के सजीव चित्र देखने के लिए कई बार दूर के कई न्यायाधीश, वकील, अफसर और उद्योगपति भी आते रहते हैं।

झगड़े भी हर तरह के आते हैं—पति-पत्नी के संबंधों के, जमीन जायदाद के, चोरी-डकैती के, नशे के, मार-पीट के और खून के भी!

कमाल की अदालत !

यह लोक-अदालत, जनता-कचहरी, ऐसे कैसे चलती है ?

सामान्य मनुष्य तो देशभर में या दुनियाभर में सामान्य ही होता है। यह अनुकूलता तो सब जगह है ही, शायद यहाँ विशेष हो। किन्तु यहाँ एक और विशेष बात है।

क्या ?

यहाँ के वनवासियों के बीच उनका बिना पैसे का एक वकील है। काश, देश के हरएक हिस्से में जनता के बीच ऐसे बिना पैसे के वकील होते !

बिना सहकार, नहीं उद्धार : ६ :

किसानों की जमीन छुड़वाने का और उनको सूदखोरों के चंगुल से मुक्त करने का काम बड़ा होते हुए भी अपने-आप में पूर्ण और पर्याप्त नहीं था। पुरानी व्यवस्था तोड़ी, तो उसका विकल्प खड़ा करना अनिवार्य था। क्योंकि घर के और खेती के खर्च के लिए हरसाल किसान को कर्ज चाहिए। अगर उसकी व्यवस्था नहीं हो पायी तो वह फिर से व्यापारी के पास जायगा और भारी सूद की रस्सी से जकड़ दिया जायगा। और फिर उसकी जमीन भी हाथ से निकल जायगी। इसलिए किसानों को तुरन्त ही कम सूद पर कर्ज मिले ऐसी व्यवस्था निहायत जरूरी थी।

जिले के सहकारी बैंक से माँग की गयी। बैंकवालों को संदेह हुआ कि ये लंगोटीवाले आदिवासी कर्ज कैसे वापस कर सकते हैं ? जिले के सहकारी संगठन का लाभ अभी तक असली गरज-मंद इन आदिवासी भाइयों तक पहुँचा नहीं था। आखिर बैंक ने हरिवल्लभ भाई के व्यक्तिगत नाम पर ७० हजार की रकम देने का फैसला किया। कुछ साल तक बैंक की रकम जब नियमित रूप से जमा होती रही, तब बैंक को पता चला कि आदिवासी गरीब होते हुए भी ईमानदार और जिम्मेदार होते हैं। प्रदेश की तत्कालीन प्राथमिक आवश्यकता देखते हुए बहु-उद्देशीय कार्यकारी सहकारी समिति और ग्रामस्वराज सहकारी समिति शुरू की गयी।

आज २ बहुउद्देशीय और ५५ ग्राम स्वराज सहकारी समितियाँ काम कर रही हैं।

रंगपुर की बहु-उद्देशीय सहकारी समिति

कार्यालय में आदिवासी किसान

शंकर भाई पाटिल इस क्षेत्र के छोर पर बसे हुए राजबोडेली नाम के गैरआदिवासी गाँव के शिक्षित युवक हैं। वे पहले शिक्षक थे, किन्तु इस क्षेत्र में हरिवल्लभ भाई के आने पर अपनी नौकरी छोड़कर हरिवल्लभ भाई के साथ चले आये और तब से उनके प्रमुख सहयोगी हैं। सहकारी (कोआपरेशन) क्षेत्र का पूरा जिम्मा उन पर है और वे बड़ी दक्षतापूर्वक काम कर रहे हैं। वे अपने अनुभव सुना रहे थे :

१. सहकारी प्रवृत्ति से नीचे के-पिछड़े हुए-वर्ग का विधायक संगठन बना। इस प्रवृत्ति से उसकी बुद्धि-चेतना जागृत हुई।

पहले की और आज की अपनी स्थिति की वे अपने मन में तुलना करने लगे हैं।

२. किसी किसान की फसल अच्छी नहीं हुई या इस प्रकार का कोई आर्थिक संकट आया, तो दूसरे किसान सहकारी समिति का कर्ज लौटाने में उसकी मदद करते हैं ताकि उस किसान को अगली बार भी सबके साथ कर्ज मिल सके। सहयोग के ऐसे कई प्रसंग सामने आते रहते हैं।

३. गरीब किसानों को, भावना में आकर ज्यादा रकम दे देते हैं, तो बाद में वसूल करने में बड़ी दिक्कत आती है। फिर भी उनकी कठिनाइयाँ देखकर जान-बूझकर भी उनको थोड़ी ज्यादा सुविधा दे दी जाती है। ऐसे किसानों के साथ कार्यकर्ताओं का सामाजिक संबंध बनना चाहिए कि जिससे उनको गलत खर्चों से रोक सकें और उनकी सच्ची कठिनाइयों को समझ भी सकें।

४. इस प्रकार के क्षेत्र का किसान अभावपूर्ण स्थिति में रहता है, इसलिए ईमानदार होते हुए भी जरासी असावधानी के कारण पैसा खर्च कर डालता है और रकम वापस नहीं कर पाता, इसलिए फसल तैयार होने पर वसूली का काम बिना चूके कर लेना चाहिए। जिस सहकारी समितियों में हम ऐसा कर पाते हैं, उनको चलाने में कोई दिक्कत नहीं आती।

५. किसानों का जो उत्पादन होता है, उसको समितियों के द्वारा इकट्ठा बेचने पर अच्छा दाम मिलता है और कपड़ा, तेल, कापी-पेन्सिल जैसी छोटी-मोटी जीवन-व्यवहार की अनेक आवश्यक चीजें समितियों के भण्डारों द्वारा उनको मिलने पर उनके समय, शक्ति और पैसे की काफी बचत हो जाती है, जिनका उपयोग वे खेती में कर सकते हैं और भाव की मार भी नहीं पड़ती। खरीदने-

बेचने की इन दोनों प्रक्रियाओं से उनको बहुत आर्थिक और सामाजिक लाभ होता दिखाई देता है।

६. हमारी बहु-उद्देशीय सहकारी समितियों के लिए अच्छे कार्यकर्ता मिल गये हैं। इसलिए काफी अच्छा काम चल रहा है, परन्तु ग्रामस्वराज मंडल छोटे-छोटे देहातों में है और वहाँ के कार्यकर्ताओं को लोगों से घुल-मिलकर रहना और काम करना होता है। इसके लिए हमें वैसे कार्यकर्ता मिलते नहीं हैं। यह हमारी बड़ी दिक्कत है। यहाँ हमने क्षेत्र के कुछ युवकों को तैयार किया है, किन्तु हमारी अनेक प्रवृत्तियों के लिए वे काफी नहीं हैं।

शंकर भाई ने एक बहुत अच्छी बात सुनायी : "एक किसान मेरे पास १० रुपये माँगने आया। समिति के नियम के मुताबिक दो सीजन पर दो किश्तों में ही पैसे दिये जा सकते हैं। मैंने उसे पैसे नहीं दिये। दूसरे दिन वह फिर आया और किसी तरह १० रुपये की व्यवस्था कर देने की प्रार्थना की। पूछने पर मालूम हुआ कि उसका छोटा बच्चा बीमार था और उसको दवाई खरीदनी थी। मैं सोचने लगा, अगर यह किसान बनिये के पास जाता, तो बनिया सूद तो ज्यादा चढ़ाता ही, किन्तु उसके साथ बातचीत करके पहली बार ही तुरन्त उसको १० रुपये तो अवश्य दे देता, जिसे लेकर वह आदमी दवा खरीदकर अपने बच्चे को खिला सकता। जरूरी मौके पर कोई उसका खयाल करे, उसको सहारा दे, तो उसके चित्त पर उसका बहुत बड़ा असर पड़ता है। मैंने उसको १० रुपये दिये और सोचा कि नियम जड़ नहीं विवेकपूर्ण होने चाहिए। इस तरह कई बातों का खयाल रखना पड़ता है। साहूकारों की जगह सिर्फ आर्थिक व्यवस्था कर देनेभर से काम नहीं बनता।

गजलावांट गाँव का ग्रामदान हुआ, तब एक व्यापारी युवक वहाँ अपनी निजी दूकान चलाता था। ग्रामदान होने के बाद उससे बातचीत करने पर वह नयी व्यवस्था मे काम करने के लिए तैयार हुआ। उसने निजी दूकान को गाँव की दूकान के रूप में बदल दिया। बाद मे उसको ग्रामस्वराज मंडलियों का काम सौंपा गया और आज तो उस सुन्दरलाल भाई को इस क्षेत्र की बहु-उद्देशीय समितियों का व्यवस्थापक बना दिया गया है। वे ग्रामदानी क्षेत्र का लाखों का व्यवहार करते हैं। इस तरह शंकर भाई को कुछ अच्छे सहयोगी मिले हैं।

सहकारी वस्तु भण्डार, रंगपुर

लोगों द्वारा खरीद और मुनाफा

वर्ष	बिक्री	डिविडेण्ड (प्रतिशत)	मुनाफा
१९६२	१५,२७०.६६	४	१४५४.०३
१९६३	२०,४५३.३९	३	६१९.००
१९६४	४०,०४०.७०	५।	४२१३.४८
१९६५	१,२६,६२०.००	५	४०६१.८४
१९६६	२,२१,६०५.००	५	५०५२.६५

इस मुख्य सहकारी वस्तु भण्डार (सेन्ट्रल स्टोर) में जीवनोपयोगी, खासकर किसानों के काम की चीजों की बिक्री होती है। यह भण्डार भी यहाँ की सहकारी प्रवृत्ति का एक अंग है। इसके साथ सटा हुआ एक बड़ा पक्का गोदाम भी है, जिसमें किसानों का माल जब तक योग्य बाजार-भाव नहीं मिलता, तब तक ठीक से रखा जाता है।

विविध कार्यकारी सहकारी समिति की ओर से किसानों को अच्छी किस्म के गेहूँ और मूँगफली के बीज दिये गये :

	गेहूँ		मूँगफली		
वर्ष	पक्का मन	कीमत	पक्का मन	कीमत	बीज की किस्म
१९६२	—	—	३२	५१२.००	दिग्विजय कपस
१९६३	—	—	५०	१०००.००	,,
१९६४	२५	६२५.००	१०१	२०२०.००	,,
१९६५	४०	१२००.००	६०	१८००.००	,,
१९६६	४०	१६५०.००	८०	३२००.००	,,

किसानों को १९६३ में १८२४ रुपये की, १९६४ मे ६२९८ रुपये की और १९६५ मे ८४६३ रुपये की खाद भी दी गयी।

ग्रामदान सहकारी वस्तु भण्डार, कपरायली

वर्ष	व्यापार	मुनाफा	विशेष कर्ज दिया गया
१९५७-१९५९	५६६५.००	३२३.००	३३०००.००
१९६०-१९६३	—	—	३२१०००.००
१९६३-१९६४	—	—	२७०००.००
१९६४ १९६५	—	—	३५०००.००
१९६५-१९६६	—		—
१९६६-१९६७	८६२६.८८	२३४.८८	

रंगपुर क्षेत्र के दूर के इस छोटे-से गाँव मे ग्राम-दूकान शुरू की गयी, जो १९५७ से १९५९ तक चली। सन् '६० मे यहाँ ग्राम-स्वराज्य समिति बनी और अब तक कर्ज देने का काम किया। अब इस समिति के अन्तर्गत फिर से ग्राम-दूकान शुरू की गयी है।

इस क्षेत्र में पहले से अब ज्यादा फसल होती है, फिर भी सिंचाई के अभाव के कारणों से अभी पूरे सालभर की आवश्यकता

जितना अनाज नहीं होता है। यहाँ का किसान कपास काफी पैदा करता है। उसको बेचकर वह कुछ महीनो का अनाज खरीदता है। अनाज की दूकान भी खोली गयी है, जिससे खासकर गरीब ग्रामीणो को महँगाई की मार कम पड़े और दूसरी ओर सिंचाई की सुविधाएँ बढ़ाने का प्रयत्न भी जारी है।

सस्ते अनाज की दूकान

वर्ष	जिन व्यक्तियो को लाभ मिला	बिक्री मनो मे
१९६१-६२	३३००	६७००
१९६२-६३	४५००	९०००
१९६३-६४	५७००	१०२००
१९६४-६५	६५००	१३०००
१९६५-६६	६८००	१५०००
१९६६ जून तक	५६००	१४०००

रंगपुर ग्रूप विविध कार्यकारी सहकारी समिति के द्वारा किसानो की मूँगफली और कपास बेचे गये।

मूँगफली

वर्ष	मन	कीमत	कमीशन
१९६३	१०४०	१९६१४.२८	—
१९६४	१८२०	४५२२५.००	—
१९६५	१३२०	४११८४.८४	—
१९६६	५९०	२२५०१.३२	—

कपास

वर्ष	मन	कीमत	कमीशन
१९६५	३१५०	१८००५६ ६९	६८६.५५
१९६६	५२०३	३४३०००.००	१३१०.००

इस तरह एकसाथ समिति द्वारा बाहर माल बेचने से किसानों को माल का भाव भी अच्छा मिलता है और मंडली को कमीशन भी मिलता है जो किसानों में ही बँटता है।

रंगपुर ग्रूप विविध कार्यकारी सहकारी समिति

साल	सदस्य संख्या	शेअर फंड रुपया	कर्ज दिया गया	मुनाफा
१९५७	५८२	२४७००	६५०००	३३८.५३
१९५८	२४२	२१८९०	१५०००	६७७.६६
१९५९	२५२	२०८१०	२५०००	१३६७.४९
१९६०–६१	२७२	१९३३०	१७९८५	१७८.१५
				७५२.७९
१९६२	२७५	१९५३०	२६६६५	१४७४.३०
१९६३	३३६	२२१२०	३२०००	२०२.१०
१९६४	३५१	२५४८५	५७७३०	६१९.००
१९६५	३६९	४०१४५	११४२०८	४२१३.४८
१९६६	३७२	४२६४५	१६००००	४०६१.८४

जाम्भा विविध कार्यकारी सहकारी समिति

सन्	सदस्य संख्या	शेअर फंड रुपये	कर्ज	मुनाफा
१९५८ में शुरू होने तक की स्थिति	१७	३१०	१६६०	—
१९६६ मे आज की स्थिति	७५	९११५	५००००	२१३२.८९

यहाँ की सारी सहकारी प्रवृत्ति के आर्थिक स्रोत मुख्यतः तीन हैं। सहकारी समितियाँ किसानों के तैयार किये गये माल को बाजार में उचित भाव पर बेचती हैं तथा अपने क्षेत्र के किसानों

को बाहर से रासायनिक खाद, उन्नत बीज और खेती के नये औजार ला देती हैं। इस व्यवहार मे समितियो को थोड़ा-बहुत कमीशन मिलता है। यह कमीशन एक स्रोत है। समितियाँ किसानो को कर्ज देती हैं, तो उनसे उचित सूद भी लेती हैं। यह सूद दूसरा स्रोत है। मुख्य भण्डारो को व्यापार मे जो मुनाफा होता है, वह तीसरा स्रोत है। फिर कुल व्यवहार में जो मुनाफा रहता है, उसका सब किसानो के हित के काम में विनियोग किया जाता है और कुछ अंश मे नकद भी वितरण किया जाता है।

ग्राम-स्वराज सहकारी समिति

गॉव	स्थापना	शुरू मे सदस्य संख्या	वर्तमान सदस्य संख्या	शुरू का शेअर फंड	आज का शेअर फंड
रंगपुर	२९– ७–'५९	१८	७२	११००	६५८०
गजलावांट	२९– ७–'५९	३७	४३	४७०	६९८०
मातोरा	३०– ७–'५९	२७	३१	३९०	६९००
रतनपुरा	३०– ६–'५९	३०	५८	४००	१९५०
करमदी	१५–११–'६०	७	२२	७५०	५४०

कुल ४० ग्राम-स्वराज सहकारी समितियाँ कार्य कर रही हैं, जिनका कुल शेअर फंड ८४,२३५ रुपये है।

सहकारी मंडलियो के द्वारा किसानों को बहुत कम सूद पर कर्ज मिलने लगा, इसलिए धीरे-धीरे वे साहूकारों के कर्ज से मुक्त होते गये और उनकी आर्थिक क्षमता बढ़ती गयी। वे अच्छी खाद, अच्छा बीज और अच्छे औजार इस्तेमाल करने लगे और

उत्पादन बढ़ा। नमूने के तौर पर तीन गाँव के तीन किसानों की जानकारी यहाँ दी जा रही है :

गजलावांट छोटाभाई बापुभाई

८ एकड़ जमीन, ६ व्यक्ति, १०१० रुपये कर्ज

१९५७-५८ फसल	खर्च	कर्ज	घाटा	बचत	कारण
४५० कपास	२५ लगान	१०१०	११८०	—	६०-८० प्रतिशत सूद
२४० मूँगफली	२५ घास				
४५० अनाज	४० बढ़ई-लुहार				
११४०	३० मजदूरी				
	६० बीज-खाद				
	६०० अनाज				
	३५० कपड़ा				
	१०० तेल-नोन				
	६० व्यवहार				
	२० धर्मादा				
	१३१०				
	१०१० कर्ज				
	२३२०				

सन्	पैदावार	खर्च	सूद	घाटा	बचत	कारण
१९५८-५९	१३५०	१३३५	३२५	३१०	—	२५ % सूद
१९५९-६०	१४८०	१४७३	१६३	१५६	—	१२½ "
१९६०-६१	१६००	१३९२	८२	—	१२६	९½ "
१९६१-६२	१२५०	१४००	८२	२३२	—	कम वर्षा

सन्	पैदावार	खर्च	सूद	घाटा	बचत	कारण
१९६२-६३	२०५०	१४२५	८२	—	६४३	अच्छी वर्षा
१९६३-६४	२१२५	१४५५	८२	—	६८८	

१९५७-५८ में फी एकड़ उत्पादन १४१ रु०

१९६२-६४ मे „ २६६ रु०

रंगपुर मूखलाभाई आमजीभाई कोली

९ एकड़ जमीन, ७ व्यक्ति, पुराना कर्ज ७५० रु०

ग्रामस्वराज की क्रांति से पहले	उत्पादन	खर्च	कर्ज	घाटा	बचत	कारण
१९५७-५८	२७५ मूँगफली ६१० कपास ५२५ अनाज १४१०	२५ लगान ७५० अनाज ३७५ कपड़ा १५० घास १०० बीड़ी ५० धर्मादा ५० व्यवहार २० सुनार लुहार २० दवा २५ फुटकर १२०० कर्ज २७४०	१२००	१३३०	—	८० से १००% सूद

सन्	उत्पादन	खर्च	सूद	टूट	बचत	कारण
१९५८-५९	१५६०	१४४५	३८०	२६५	—	२५ % सूद
१९५९-६०	१६२०	१७६५	१९०	३३५	—	१२ „

सन्	पैदावार	खर्च	सूद	टूट	बचत	कारण
१९६०–६१	१६९०	१४६०	९५	—	१३५	९३ % सूद
१९६१–६२	१४२५	१४८०	९५	१५०	—	कम वर्षा
१९६२–६३	२२१५	१७०७	९५	—	४१३	अच्छी वर्षा
१९६३–६४	२७०३	१७००	९५	—	९०८	सामूहिक मार्केटिंग शुरू

१९५७–५८ में फी एकड़ उत्पादन १५६ रु०
१९६३–६४ में ,, ३०० रु०

मातोरा शेनाभाई जीताभाई भील
जमीन ६ एकड़, ५ व्यक्ति, कर्ज ८७५ रु०

ग्रा० क्रा० पूर्व	उत्पन्न मनों में	खर्च रुपये	कर्ज	घाटा	बचत	कारण
१९५७–५८	४१० कपास	१६ लगान	८७५	९११	—	६०–८०% सूद
	व० म० १३½					
	१७० मूँगफली	२० बढ़ईगिरी, लोहारी				
	व० म० ७	४० खेती				
	३६० अनाज	५०० अनाज				
	व० म० १४	६० तेल				
	९४०	२०० कपड़ा				
		६० व्यय-बीड़ी				
		३० धर्मादा				
		२५ व्यवहार				
		२५ दवा दारू				
		९७६				
		८७५ कर्ज				
		१८५१				

सन्	उत्पन्न	खर्चे	सूद	घाटा	बचत	कारण
१९५८–५९	११२०	१३४४	२६८	४२९	—	२५% सूद
१९५९–६०	१३१०	१२१०	१३४	३४	—	१२½ ,,
१९६०–६१	१४००	११४३	६७	—	१९०	६¼ ,,
१९६१–६२	१०५०	११५०	६७	१६७	—	कम वर्षा
१९६२–६३	१६००	११७५	६७	—	४१८	अच्छी वर्षा
१९६३–६४	१८६०	१२००	६७	—	५९३	अच्छी वर्षा मार्केटिंग

१९५७–५८ में फी एकड़ उत्पादन १५७ रु०

१९६३–६४ में ,, ३१० रु०

●

आनन्द-निकेतन

: ७ :

बड़ोदा के प्रतापनगर स्टेशन से चलनेवाली गाड़ी चार घंटे में छोटा उदेपर पहुँचाती है। वहाँ से बस द्वारा डेढ़ घंटे मे आनंद-निकेतन पहुँच जाते हैं। इस आश्रम के चारों ओर कई आदिवासी गॉव बसे हैं। इन गॉवो की प्रजा का प्रमुख धंधा खेती है और नृत्य, मेले तथा त्योहार इनके सांस्कृतिक साधन हैं। मेले मे विवाहेच्छु युवक युवतियॉ एक-दूसरे को पसंद करते हैं और बाद में बुजुर्ग मान्यता देते हैं। शिक्षित कहे जानेवाले समाजो से यहाँ की स्त्रियाँ ज्यादा मुक्त हैं। ऐसे लोगों की सेवा का काम पिछले सत्रह साल से आनन्द-निकेतन आश्रम कर रहा है। आश्रम की स्थापना से लेकर आज तक इस रंगपुर क्षेत्र में समाज परिवर्तन का जो कार्य चला, उसकी झाँकी तो आगे दी ही गयी है, यहाँ हम जरा आश्रम और उसकी प्रवृत्तियाँ देखेंगे।

लोक-सेवा के लिए लोकाधार पर खड़े इस आश्रम को स्वराज्य के बाद के किसी प्रवाह से सन्तोष नहीं रहा था। जब विनोबाजी का भूदान आन्दोलन शुरू हुआ, तो उसमें अपने आंतरिक उद्‌घोष की व्यापक संभावना आश्रम को दिखाई दी और एक तरह से आश्रम भूदान आन्दोलन को समर्पित हो गया।

आश्रम के चार केन्द्र हैं, जहॉ बैठकर कार्यकर्ता देहातो मे ग्रामस्वराज्य की दिशा में बढ़ने का प्रयत्न करते रहते हैं। आश्रम के अन्दर एक जीवनशाला है, जिसमें आदिवासी बच्चे शिक्षा प्राप्त करते हैं। एक चिकित्सालय है, जिसका लाभ आसपास के

देहात ले रहे हैं। विविध कार्यकारी सहकारी समितियों का दफ्तर, किसानों का माल रखने का बड़ा गोदाम और रोजमर्रा के उपयोग की वस्तुओं का भण्डार है। प्रार्थना का चबूतरा, सामूहिक रसोई घर और अतिथि-निवास। छोटी-सी बालवाड़ी और छोटी-सी गोशाला। तरह-तरह के आम के पेड़ काफी मात्रा में हैं। थोड़ी खेती भी है, जिसमें फल, सब्जी और थोड़ा अनाज होता है। गैस-प्लाण्ट भी लगाया है, जिससे आश्रम का सुबह का नाश्ता पकता है और शाम को प्रकाश मिलता है। और हैं ४० कार्यकर्ता जो इस क्षेत्र की आंतर-बाह्य सब प्रवृत्तियों के सर्जक हैं। कुछ कार्यकर्ता नजदीक के गैर-आदिवासी गाँवों के उत्साही युवक हैं। कुछ कार्यकर्ता इस संस्था के शिक्षण और मार्गदर्शन से तैयार हुए इसी क्षेत्र के आदिवासी युवक हैं और कुछ साथी गुजरात के अन्य जिलों से आये हुए हैं।

इस क्षेत्र की कई प्रवृत्तियों का केन्द्र यहाँ है। प्रादेशिक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र के कई कार्यों में संस्था का आदान-प्रदान और सहयोग रहता है।

दूसरे विश्वयुद्ध के बाद स्केन्डीनेवियन देशों में से कई देशों के निवासित युवक यहाँ आकर बसे थे। विश्वयुद्ध के निवारण के लिए उस समय के शान्ति-आन्दोलन (पीस बिल्डर्स मूवमेन्ट) का कार्य उनको बहुत अच्छा लगा। स्केन्डीनेवियन देशों में सेवा को सरवास (Servas) कहते हैं। वही शब्द इस आन्दोलन का प्रतीक बन गया। तब से यह प्रवृत्ति 'सरवास' नाम से प्रचलित हुई और चलने लगी। आनन्द-निकेतन आश्रम में इस अन्तर्राष्ट्रीय सेवा संस्था की भारत की शाखा है। इसलिए हर साल दुनिया के कई देशों से युवक-युवतियाँ यहाँ आते हैं, रहते हैं और काम भी करते हैं।

पिछले दिनों इंग्लैंड से डोनाबहन आयीं थीं, जिसने एक साल संस्था के दवाखाने की पूरी जिम्मेदारी सँभाली थी। वहाँ से शीलाबहन और जीमभाई भी आये थे। जीमभाई इंजीनियर थे और शीलाबहन नर्स थीं। उन्होंने अपनी पूरी शक्ति इस क्षेत्र में लगायी। अमेरिका की युवक प्रवृत्ति की एक अग्रणी एलन-बहन आयी थी। उसने अमेरिका लौटने के बाद यहाँ की जीवन-शाला की सहायता के लिए एक कमेटी बनायी है और वह उस माध्यम से काम के साथ आत्मीय सम्बन्ध रखती है।

यहाँ यूनो, सिलोन, जापान, इंग्लैंड, कनाडा, फ्रान्स, जर्मनी, स्कॉटलैंड, अमेरिका, बर्मा, क्यूबा, चीन, आयरलैंड, इटली,

अतिथिदेवो भव

आनन्द-निकेतन में हमेशा ही ऐसे देशी मित्र आते रहते हैं

यूगोस्लाविया, डेनमार्क, इजराइल आदि नाम देखकर बहुत ही आनन्द होता है। मगर ये देश यहाँ के आदिवासी क्षेत्र में कैसे ?

यही तो कमाल की बात है। छोटे-छोटे निवासों पर विश्व के इन विविध देशों के नामों की सुन्दर अक्षरों में लोहे की तख्तियाँ लगी हैं, मानो आश्रम का एक-एक कमरा एक-एक देश है। इससे यहाँ आनेवाले अनेक विदेशी बन्धु-भगिनियों को तुरंत अपनापन महसूस होने लगता है, दूसरी ओर कार्यकर्ता और विद्यार्थियों को प्रत्यक्ष और परोक्ष में विश्वव्यापी भावना का पाठ सीखने को मिलता है।

इस दृष्टि से आश्रम द्वारा छोटे पैमाने पर जय ग्राम से लेकर जय जगत् तक की शिक्षा दी जाती है। ●

आँकड़े बोल रहे हैं

आनंद-निकेतन आश्रम और उसके उप-केन्द्रों द्वारा बंधक जमीन छुड़ाने से लेकर नीरा-उत्पादन तक की जो प्रवृत्तियाँ चलायी गयी हैं, उनके कुछ आँकड़े यहाँ दिये जा रहे हैं। आँकड़े स्वयं बोलेंगे, इसलिए उसके बारे मे विशेष कहने की जरूरत नहीं है।

गाँव	छुड़ाई गयी जमीन बीघे मे
खड़किया	५४
मातोरा	८०
गजलावांट	१०८
सात वेडिया	५८
रंगपुर	४६
	३६६

इस क्षेत्र के कुल १७५ गाँवो मे, जिनमे ये ५ गाँव भी शामिल हैं, १९८० बीघे जमीन बंधक थी, जो छुड़ायी गयी।

कंटुर बंडिंग

गाँव	५२-५७ मे एकड	६२-६६ मे एकड़
गजलावांट	८०	
मातोरा	४०	३००
रतनपुरा		१८०
वाडीया (केसनिया)		३००
खापरिया	१२०	७८०

क्षेत्र के कुल १२५ गाँवो मे २१००० एकड से भी ज्यादा जमीन का कन्टुर बडिंग हुआ है।

लोक-अदालत मे झगड़े का निपटारा

सन्	१९४९ से	सन्	१९५२	तक	३२००
,,	१९५३	,,	'५७	,,	४५१८
,,	१९५८	,,	'६२	,,	४३२१
,,	१९६३	,,	'६६	,,	२७६१
					१५०००

मामलो के प्रकार	संख्या
खून	७६
खून के प्रयत्न	७२६
पति पत्नी के झगडे	९२२७
जमीन	२६६५
मारपीट और अन्य	२०६८
चोरी	२३८
कुल	१५०००

शराब-मुक्ति

९०–१००	प्रतिशत	शराब से	मुक्त गाँव	२३
७५–९०	,,	,,	,,	३१
५०–७५	,,	,,	,,	२७
२५–५०	,,	,,	,,	३६
२०–२५	,,	,,	,,	२२
१–१०	,,	,,	,,	११
			कुल गाँव	१५०

सर्वोदय शुश्रूपालय

(रोगियों की संख्या जिन्हें दवा दी गयी)

शुश्रूषा का प्रकार	१९६१	१९६२	१९६३	१९६४	१९६५	१९६६
रोगियों को दवा दी गयी दवाखाने में	३६००	७२००	९०००	१०८००	८५००	३६००
शुश्रूपालय में रखकर सेवा की गयी	–	६०	९०	५५	५०	१२
रोगियों को उनके घर पर जाँचकर दवा दी गयी	–	७२	९४	११०	५०	२०
रोगियों की कुल संख्या	३६००	७३३२	९१८५	१०९६५	८६००	३६३२

यहाँ की प्रमुख बीमारियाँ हैं : १–कै दस्त, २–खुजली, दाद, ३–खाँसी, ४–बुखार, ५–चोट लगना, ६–टी० बी० ।

विदेशों से आये मेहमान

देश का नाम	४९–५७	५७–६२	१९६३	१९६४	१९६५	१९६६
अमेरिका	१२	२५	९	७	६	२
कनाडा	–	१	१८	१६	२	–
इंग्लैंड	३	७	२	२	१	–
जर्मनी	–	–	३	२	–	–
फ्रांस	–	१	२	३	–	–
आस्ट्रेलिया	–	–	३	–	–	–
जापान	–	–	–	१	–	–
इजराइल	–	–	३	–	–	–
अफ्रीका	१	–	–	–	–	–

देश का नाम	४९–५७	५७–६२	१९६३	१९६४	१९६५	१९६६
डेनमार्क	–	–	१	–	–	–
स्विट्जरलैंड	–	–	–	–	१	–
	१६	३४	४१	३१	१०	२

विश्व के विभिन्न देशों से आये हुए इन १३४ अतिथियों में से ७७ विद्यार्थी भाई-बहनें, ४४ शिक्षक, १८ प्रवासी और ५० सेवक कार्यकर्ता थे।

इस क्षेत्र में शराब-बंदी का आन्दोलन चलाया गया। उसके साथ-साथ लोगों के पोषण और स्वास्थ्य की दृष्टि से नीरा प्रवृत्ति को प्रोत्साहन दिया गया। नीरा-प्रवृत्ति विकसित होती जा रही है।

नीरा-उत्पादन और अन्य जानकारी

केन्द्र का नाम	नीरा उत्पादन लीटर में ६२–६३	१९६५	१९६६	स्थानिक टेपर्स	केन्द्रों में प्रशिक्षण और मजदूरों का खर्च
तलेटी	६३७६	२६१६	२५६४	१७	६१३०.५४
रामसरी	–	११००	१४५०	१६	७११.७५
रतनपुरा	–	६४००	१५०१	८	२३७९.००
सारंगपुर	–	–	५६८	११	१७०.००
डाभिआ	–	–	४००	७	१७०.००
झेर	–	–	३६८३	१५	४२७.००
जाम्बा	–	–	१३०८	६	४७७.००
झिलावा	–	–	१५००	७५	५७७.००
खेरका	–	–	१९७	२	१७५.००

इन केन्द्रों की कुल नीरा-बिक्री ८९७४ रुपये हुई। बिक्री करने के उपरांत जो नीरा बच जाती है, वह काम करनेवालों को पिला दी जाती है। इस तरह अभी तक कुल २०२० लीटर नीरा पिलायी गयी।

स्थानीय टेपर्स तैयार किये जाते हैं और कार्यकर्ता वहाँ जाकर सलाह-मशविरा और जरूरी मार्गदर्शन करते हैं। इससे ग्रामवासियों में नीरा-प्रवृत्ति चलाने की ठीक क्षमता आयी है।

पशुओं के तुलनात्मक आँकड़े

(ग्रामदान के पहले और अब)

ग्रामदानी गाँव	गाय		बैल		भैंस		कुल	
	पहले	अब	पहले	अब	पहले	अब	पहले	अब
रंगपुर	३५	६५	७२	१०६	३०	४७	१३७	२१८
मातोरा	४०	४५	८२	१०३	३५	४६	१५७	१९४
गजलावांट	२२	४७	४४	९०	१९	४०	८५	१३७
सड़किया	१०	१६	३२	७०	१४	१७	५६	१०३
जीतनगर	३०	३९	६२	७७	१९	३१	१११	१४७

१. गोठड़ा

विक्रम सं० २०१३ के ज्येष्ठ महीने में सबने मिलकर सोचा कि गाँव के सारे लोगों का एक प्रीति-भोज हो। निर्णय हो गया। लेकिन इतने बड़े समूह-भोजन का आयोजन करें कहाँ? तय हुआ कि गाँव से थोडी दूर अंगरक्षी माता के मन्दिर के मैदान में किया जाय। शाम को सारे गाँव में जाहिर कर दिया गया। दूसरे दिन सुबह गाँव के बीच के एक बरामदे में कुछ बर्तन रख दिये गये। आशय यह था कि लोग इच्छानुसार अनाज सामूहिक रसोई के लिए उन बर्तनों में डालें। सुबह दो घटे में ही आटा, दाल, चावल, घी, तेल, गुड़ आदि से बर्तन भर गये। एक टोली सारा सामान उठाकर रसोई बनाने पहुँच गयी, एक टोली ने पानी का प्रबन्ध किया, एक टोली ने बैठने की जगह की सफाई-मरम्मत कर ली। उस दिन बड़ा जलसा हुआ। सारे गाँव ने एक साथ बैठकर बड़े मजे से भोजन किया और दिल खोलकर खिलाया। आज सबने विशेषरूप से महसूस किया कि अन्न से ज्यादा स्वाद स्नेह में है। खाने के बाद सब आराम से, आनन्द से बातें करते हुए बैठे। उसमें भट्ट साहब ने बात रखी कि अगर इस प्रकार के स्नेह का स्वाद, जीवन की मिठास जिंदगी भर चखना चाहें, तो विनोबाजी के मार्ग पर हमको चलना चाहिए। सबके कहने पर भट्ट साहब ने ग्रामदान के रूप में गाँव को परिवार बनाने की बात समझायी

और उस स्नेह-मिलन में गोठड़ा ने ग्रामदान का निर्णय किया। संस्कृत 'गोष्ठी' शब्द से गुजराती मे 'गोठड़ी' शब्द बना है। गोठड़ी याने साथ में मिलकर निकटताभरी हार्दिक बात करना। गुजराती में गोठ शब्द का अर्थ होता है सबके घर से थोड़ा-थोड़ा इकट्ठा करके बाँटना। बाँटने की और साथ मिलकर बात करने की—ये दोनों बातें ग्रामदान मे आती हैं। याने गोठड़ा शब्द मे ही ग्रामदान का अर्थ भरा हुआ था, जो आज प्रत्यक्ष देखने मे आया। गाँव के निर्णय के बाद आसपास के देहातों के लोगों को निमन्त्रण देकर उस लोक-सम्मेलन मे बनासकांठा जिले के अग्रणी श्री जी० जी० महेता की उपस्थिति मे सबके सामने ग्रामदान घोषित किया गया। तब से हर साल गोठड़ा मे प्रीति-भोज का आयोजन होता रहता है।

× × ×

ग्रामदान के बाद आप लोगों ने क्या किया?

"हमारे बावा (एक जाति) और कुनबी जाति के श्मशान अलग-अलग थे, सो हमने एक किये, क्योंकि साथ जीना साथ मरना है।" अमृतगिरि का विनोदी जवाब सुनकर सारी सभा ठहाके से गूँज उठी और कुछ साथी तो हँसते-हँसते लोटपोट हो गये।

खूब हँसना और हँसाना ग्रामदान का सबसे पहला कार्यक्रम होना चाहिए। उसमें से दूसरे काम अपने आप सूझेंगे और साथ मे काम करने की वृत्ति और उत्साह भी उसीमे से पैदा होगा।

गोठड़ा महेसाणा जिले के गढ़वाडा क्षेत्र के गैर-आदिवासी पाटीदार किसानों का समृद्ध गाँव है। गाँव में ५९६ एकड़ जमीन है और ४५६ की आबादी है। सबको ग्रामस्वराज्य सहकारी सोसाइटी से कर्ज मिलता है। गाँव में किसी पर सरकारी कर्ज नहीं

है। ८३ परिवारों में से ७१ कर्जमुक्त हैं। सोसाइटी का शेअर फंड रु० २४०९ है। ग्रामकोष की शुरुआत की गयी है, जिसमें ७७५० रु० जमा हुए हैं। गाँव के लोगों ने गाँव की फसल के संरक्षण के लिए और स्कूल आदि के लिए २१२४ रुपये का स्थानीय फंड जमा किया है। गाँव में एक बार ६१२ रुपये की चोरी हुई, तो सब लोगों ने मिलकर थोड़ी-थोड़ी रकम निकाली और उतनी रकम जमा हो गयी। गाँव में सन् '६१ से ग्राम-दूकान चलती है। नजदीक के गाँव के व्यापारी शंकराभाई ग्राम दूकान चलाते हैं। दूकान का मुनाफा बाँटने के बजाय मुनाफे की रकम से दूकान बढ़ाते जाने का 'ग्रामसभा' ने निर्णय लिया है। दूकान में अब तक ३०१४ २३ रु० का मुनाफा हुआ है।

सबसे बड़ा पराक्रम इस गाँव ने खेती के क्षेत्र में किया है। ग्रामदान के बाद उत्साह की लहर दौड़ गयी है। लोगों ने १०० एकड़ जमीन पर कटुर बडिंग किया। अच्छे बीज, खाद, सुधरे औजार और खेती की सुधरी पद्धतियों का गाँव में प्रवेश हुआ। आज गाँव का हरएक किसान सुधरे हुए बीज ही इस्तेमाल करता है। इतना ही नहीं, इस क्षेत्र के ४० देहात इस गाँव से सुधरे हुए बीज ले आते हैं। पूरे गाँव की जमीन में नयी पद्धति के अनुसार खेती होती है। इसलिए इस गाँव में अब पूरे दो साल का अनाज बराबर रहता है। ग्रामदान से पहले यहाँ जो पैदावार थी, उससे आज पौने दो गुना अनाज पैदा होता है।

विकास

	कुएँ	बैलगाड़ी	गाय	बैल	भैंस	खाद के गड्ढे	स्कूली बच्चे
पहले	३०	१०	१५	१२६	६०	५	६०
अब	३६	१५	३१	१५७	७७	६०	१२५

उत्पादन

	१९६२–६३ का उत्पादन		१९६४–६५ का उत्पादन	
	एकड़	कच्चा मन	एकड़	कच्चा मन
गेहूँ	७५	१८७५	१२०	३०००
बाजरा	५८	८७०	४५	९१०
मक्का	८०	२०००	३५	९३५
एरंडी	४७	४७०	४३	७१६
मूंगफली	३३६	५६४०	३५३	६४००
	५९६	१०८५५	५९६	११९६१

फसल बढ़ाने में लोगों के उत्साह और परिश्रम ने तो काम किया ही, किन्तु विकास विभाग के सेवाभावी ग्रामसेवक श्री बाडी भाई ने गोठड़ा ग्रामदान का विकास करने के लिए जो प्रयत्न किया है, वह भी उल्लेखनीय है और इस गाँव की प्रगति में सबसे ज्यादा हिस्सा रहा आदरणीय श्री भट्ट साहब का।

साहब भी कभी सेवक हो सकता है ?

हाँ जी, यह साहब लोगों की निरंतर अथक सेवा करनेवाला सेवक है, है नहीं, 'था'।

ये पंक्तियाँ लिखते लिखते गोठड़ा गांधीनिधि के सेवक रतनसिंह भाई का पत्र मिलता है कि एक गाँव से दूसरे गाँव जाते समय श्री भट्ट साहब को सर्पदंश हुआ और वे चल बसे। दिन-रात जनता की सेवा में मस्त रहनेवाले सेवक श्री नर्मदाशंकर हरिलाल भट्ट लोकसेवा का अपना काम करते-करते ही स्वर्ग सिधारे।

सरकारी नौकरी करते हुए उन्होंने स्वराज्य-आन्दोलन में काफी सहयोग दिया था। सिविल जज थे। नौकरी के बाद 'सामाजिक न्याय' का झंडा उठाया। प्रतिष्ठा से कोसों दूर रहने के लिए उन्होंने महेसाणा जिले के गढ़वाडा क्षेत्र के लिए गोठडा गाँव के नजदीक वाड़ी पर अपना निवास रखा और वहाँ से क्षेत्र के ४० गाँवों के साथ जीवंत संपर्क से वहाँ नया वायुमंडल बनाया और शोषण-मुक्ति तथा सामाजिक न्याय का काफी काम किया। उनकी पत्नी कमला बहन का भी व्यक्तित्व स्वतंत्र और तेजस्वी है। गरीबों पर होनेवाले अत्याचार रोकने के लिए, कहीं शराब या स्त्री को लेकर होनेवाले झगड़ों को मिटाने के लिए जब वह घोड़े पर सवार होकर निकलतीं, तब देखते ही बनता था। अब तो उनकी भी काफी उम्र हुई, फिर भी काफी शक्ति से काम करती रहती हैं। कमला बहन ने स्वातंत्र्य-संग्राम के सत्याग्रह में और पिछले दिनों दीव, दमण के सत्याग्रहों में भी हिस्सा लिया था।

२. रामगढ़

बम्बई का बार-ॲट-लॉ युवक और उसकी सुशिक्षित पत्नी समाज-सेवा के विचार से बैठने के लिए किसी क्षेत्र की तलाश में थे। बसई के नजदीक एक स्थान पर उनका मन आकर्षित हुआ। समाज में समानता की स्थापना हो, यह इस युवक दंपति के दिल की चाह थी। समाजवादी पक्ष के साथ उनका संबंध था। सन् '५२ का चुनाव आया और गुजरात के बनासकांठा जिले के समाजवादी साथियों ने लोकसभा के लिए एक अच्छे शक्तिशाली व्यक्ति की माँग की। पार्टी ने इस युवक को भेजा। पति-पत्नी ने मिलकर जिलेभर में समानता के नाम का नारा बुलन्द किया

और सरकार की रीति-नीतियों की आलोचना की, तो उस समय कलक्टर ने कहा कि 'भाई साहब, बोलना आसान है, करना कठिन है।' इन्होंने चुनौती स्वीकार की और काम करने के लिए जमीन की मॉग की। कलक्टर ने महेसाणा और आबू की रेलवे लाइन के नजदीक अमीरगढ़ के पास पड़ती जमीन दी। वहाँ इर्दगिर्द के देहाती परिवारों को मिलाकर सामूहिक खेती शुरू की गयी और उनके साथ यह दंपति भी श्रमाधार के इस नये साहस में अपनी पूरी शक्ति से भिड़ गये। तब से लेकर आज तक यह सामूहिक खेती का प्रयोग चल रहा है। अनुभवों से भरपूर उस प्रयोग की अपनी अनूठी कहानी है। किन्तु वह आज का विषय नहीं है।

इन्होंने सामूहिक खेती के प्रयोग के साथ जिले की कई महत्त्व की समस्याओं को भी अपने हाथ में लेना शुरू किया और इतने वर्षों से लगातार काम करते रहे, जिसके कारण जिलेभर में लोग जी० जी० और विमला बहन का नाम बड़े आदर और प्यार के साथ लेते हैं। बीच में उन्होंने पक्ष छोड़ दिया था और लगभग पूरा समय भूदान-ग्रामदान के कार्यों में लगाते थे। समाज-नीति और राजनीति दोनों को शुद्धि के साथ चलाना होगा, इस विचार से अशोक मेहता से कुछ साल पहले वे कांग्रेस में शामिल हुए। राजनीति के साथ संबंध रखते हुए भी राजनीति से ऊपर उठे हुए, जी० जी० मेहता और विमला बहन सचाई और प्रामाणिकता के अच्छे उदाहरण हैं। जिले में वे कई रचनात्मक कार्य चला रहे हैं। जिनमें दो काम विशेष ध्यान खींचनेवाले हैं। यह सरहदी जिला होने से जी० जी० ने अन्य संगठनों की मदद से पाकिस्तान के नजदीक की पट्टी पर रचनात्मक कार्य शुरू किये हैं और श्री विमला बहन सराणिया नाम की पिछड़ी

जाति का एक टोला, जो वेश्यावृत्ति का धंधा चलाता है, उसे उस पेशे से छुड़ाकर एक बड़े चक में जमीन देकर बसाने का प्रयत्न कर रही हैं। जी० जी० के सहयोग से उनके साथी रामजी भाई, उजम भाई आदि मित्रों ने मडाणा गाँव में ठाकोर लोगों के सितम के मुकाबिले में हृदय-परिवर्तन की जो प्रक्रिया चलायी और उसमें जो सफलता मिली, वह भी उल्लेखनीय है।

सामूहिक खेती के फार्म के नजदीक के गाँव रामगढ़ में एक बार रबारी और भील कौम के बीच झगड़ा हुआ, जिसकी वजह से भीलों को गाँव छोड़कर भाग जाना पड़ा। यह मालूम होते ही जी० जी० और विमला बहन रामगढ पहुँचे। गाँववालों को अपनी गलती समझ में आ गयी और वे भील परिवारों को वापस बुला लाये। इस प्रसंग के निमित्त से जी० जी० ने उनके सामने ग्रामदान का विचार रखा। लोगों को जँचा और वह गाँव ग्राम-दान हो गया।

सन् १९५८ में रामगढ़ गाँव का ग्रामदान हुआ। बाद में गाँव के प्रमुख लोग इर्द-गिर्द के गाँवों में घूमे और पाँच ग्रामदान प्राप्त किये। ग्रामदान के बाद १५ परिवारों में भू-वितरण हुआ। गाँव के लोगों ने शराब न पीने का और मांस न खाने का संकल्प किया। लोगों ने मिलकर कुँआ खोदा, पाठशाला-भवन और पंचायत-घर बनाये। लोगों ने श्रद्धा से ग्रामदान किया। विचार समझने की और उस पर अमल करने की उनकी तत्परता रही और प्रयत्न भी किया, परन्तु सहकारी समिति के मंत्री के अप्रामाणिक आचरण तथा लोगों की व्यवस्थाशक्ति के अभाव में उधारी वसूल नहीं हो सकी और हिसाब किताब में भी गड़बड़ हुई। गाँववालों का बाहरी कार्यकर्ताओं के प्रति खास विश्वास नहीं रहा। इस अव्य-

वस्था के कारण गाँव के कुछ लोग भी गाफिल होते गये, खर्च बढ़ गया और समिति का कर्ज अदा नहीं किया जा सका। इस बात को लेकर जी० जी० ने गाँववालों से कहा कि आप कर्ज नहीं चुकाते हैं, तो वह ग्रामदान के लिए अच्छा नहीं है। आप ग्रामदान वापस ले लीजिये। गाँववालों ने कहा कि परिस्थितिवशात् हम सहकारी समिति को बंद कर देंगे, परन्तु कमियों के बावजूद हम ग्रामदान रद्द नहीं कर सकते, क्योंकि ग्रामदान का हमने संकल्प किया है।

३. वनस्थली

सन् १९२७ में सौराष्ट्र के एक युवक जुगतराम दवे ने सूरत जिले के वालोड महाल के वेड़छी गाँव में नवजागरण की शहनाई बजायी। सन् '२८ में बारडोली-सत्याग्रह हुआ। जिलेभर में राष्ट्रीय चेतना की लहर दौड़ गयी। जुगतराम दवे अपनी शरीर रूपी लेखनी से मौलिक कार्यशैली में सूरत जिले की धरती पर गांधी-जीवन के गीत रचते रहे, रचाते रहे। परिणामस्वरूप आदिवासी जनता में और खासकर नयी पीढ़ी में नये जीवन का प्रकाश दीखने को मिलता है। जिले के २१ तालुकों में से १३ तालुके आदिवासी हैं। जुगतराम भाई यहाँ की प्रवृत्तियों के प्राण रहे, फिर भी उन्होंने धीरे धीरे रानीपरज (आदिवासी) लोगों की इतनी शक्ति बढ़ायी कि इन लोगों ने मिलकर अपना एक बड़ा और मजबूत संगठन रानीपरज सेवा-सभा बनाया, जो आज आठ तालुकों में अनेक बालवाड़ियाँ, आश्रम शालाएँ, उत्तरबुनियादी शालाएँ, अध्यापन मंदिर, ग्राम-स्वराज्य विद्यालय, जंगल सहकारी समितियाँ, मजदूर समितियाँ आदि विविध संस्थाएँ और आर्थिक,

सामाजिक, शैक्षणिक प्रवृत्तियाँ चलाता है। कुछ ही समय में ग्रामीण-विश्वविद्यालय भी शुरू करने का रानीपरज सेवा सभा का विचार है। शेष पाँच आदिवासी तालुकों में दक्षिण गुजरात शिक्षा मंडल, सेवाश्रम मरोली और भगिनी समाज कार्य करते हैं। कृषि योग्य जमीन में घास उगाने की जमीदारों की गलत प्रवृत्ति के खिलाफ इस जिले के पारडी तालुके में समाजवादी साथी ईश्वरलाल देसाई ने जो किसान सत्याग्रह चलाया, उसका विशाल और शुद्ध स्वरूप देखते बनता था। गांधीजी के बाद सामाजिक न्याय के लिए तात्त्विक सत्याग्रहों में इसका नंबर पहला रहेगा। सूरत जिले की सीमा पर भूतपूर्व पोर्चुगीज संस्थान दमण के लिए भी उन्होंने वैसा ही सत्याग्रह किया था। परन्तु वह प्रक्रिया आगे नहीं बढ़ी।

सरहदी जिलों में जहाँ ईसाई पादरियों ने कुछ काम किया है, उसको छोड़ दें, तो भारत के किसी भी आदिवासी जिले में इतना व्यापक और गहरा काम शायद नहीं हुआ है। इसलिए किसीको आदिवासियों की शिस्त, शक्ति, उनका संगठन, उनकी सामूहिक चेतना और कार्य-पद्धति देखनी हो, तो जुगतराम दवे और ईश्वरलाल देसाई के कार्यक्षेत्र देखने चाहिए।

यह बात सोलह आने सत्य है कि गांधीजी के जमाने से जुगतराम दवे और ईश्वरलाल देसाई जैसे कुछ व्यक्ति सरहदी क्षेत्र में बैठ गये होते, तो चीन, पाकिस्तान के जो सवाल पैदा हुए, आज जो कश्मीर, नागालैंड, मीजो और अन्य पर्वतीय राज्य की माँग आदि के प्रश्न हैं, वे नहीं होते। खैर, भूल के प्रायश्चित्त के रूप में या तो 'जब से जगे हैं भाई तब से सबेरा' के सगुन भाव से अब गुजरात के कुछ युवकों का नेफा-क्षेत्र की सेवा के लिए जाना शुरू हुआ है। यह बहुत शुभ लक्षण और खुशी की बात है।

जुगतराम भाई के मार्गदर्शन में तैयार हुए या उनकी प्रेरणा से काम करनेवाले अनेक युवकों में से तीन युवक मित्र वेड़छी आश्रम से पाँच मील की दूरी पर डुमरखल और कणजोड गाँव के बीच एक जगह बैठे हैं। श्रद्धा, सेवा-भाव और अपनी शक्ति के अलावा भौतिक रूप से तो सिर्फ ३५ रुपये लेकर गये थे। थोड़े ही समय में आज वहाँ सुन्दर सरस छोटी-सी संस्था नजर आती है। आसपास के १७ गाँवों के साथ इस संस्था का मधुर सम्बन्ध बना है। तीनों साथी जनता के प्रति श्रद्धा लेकर आये। आज वे जनता की असीम श्रद्धा के पात्र बनते जा रहे हैं। वे हैं ठाकोर भाई शाह, दिनकर दवे और प्रफुल्ल त्रिवेदी, जो अपनी प्रवृत्तियों को समग्र ग्रामसेवा के वैज्ञानिक प्रयोग के रूप में चलाने के प्रयत्न में हैं।

जनवरी '६५ में सूरत और गुजरात के अन्य जिलों के साथियों ने मिलकर वालोड तालुका में सामूहिक पदयात्राएँ कीं, उस समय वनस्थली के बगल के डुमरखल, कणजोड और गोलण नाम के तीन गाँवों ने ग्रामदान किये। दिनकरभाई कह रहे थे, हम तो अपनी तांत की जबान से ग्रामदान का सन्देश रट गये, किन्तु लोगों को लगा कि 'गाँव पूरा एक हो, सबके सुख-दुःख का साथ में बैठकर विचार हो, सबको एक-दूसरे का आधार मिले, साथ बैठकर गाँव का आयोजन करें—यह बात अच्छी है और उन्होंने ब खुशी ग्रामदान किया।' दिनकरभाई आगे कह रहे थे, 'वे लोग हमसे ज्यादा श्रद्धापात्र हैं ऐसी मुझे प्रतीति हुई।' जब मैं इन गाँवों में घूमा, तब मुझे भी उनका उत्साह दिखायी दिया। देखा कि उन्होंने समझ-बूझकर ग्रामदान किया है। अभी नयी फसल तैयार तो हुई नहीं है, परन्तु ग्रामकोष के लिए अपना हिस्सा देने को वे तैयार हैं, जमीन का २०वाँ हिस्सा निकालने के लिए भी तैयार हैं।

सूरत जिले के वालोड मराल के ये तीन ग्रामदान इस प्रकार हैं :

जानकारी	कणजोड	डुमखल	गोलण
परिवार संख्या	७१	७६	१८३
आबादी	४२५	५०७	१०३६
शिक्षित-पुरुष	६५	४१	१२३
,, स्त्रियाँ	४	१२	२५
जोत की जमीन	४८६-१८	७३३-१	१०५९-३

वालोड महाल की प्रति व्यक्ति आमदनी १५० रुपये है और प्रति एकड़ उत्पादन सिर्फ ८४.०० रु० है। ग्रामदान के बाद ग्राम-स्वराज्य की ओर आगे बढ़ने के लिए तीनों गाँव तैयार हैं। ग्रामदान के बाद तीनों ग्रामदान और नजदीक के अन्य ५ गाँवों के लोगों का ग्राम-आयोजन का एक शिविर किया गया, जिसमें सामूहिक और ग्रूप-चर्चा के द्वारा लोगों ने मिलकर शिक्षण, सहकार, कृषि, पशुपालन, आरोग्य, ग्रामोद्योग, अन्य काम-धन्धे, सामाजिक मेलमिलाप आदि विषयों के बारे में एक-एक गाँव की व्यवस्थित योजनाएँ बनायीं। शिविर के समय अम्बर कताई-दर्शन, भूमि-पृथक्करण, सूक्ष्म-दर्शक यन्त्र में जीवाणु दर्शन, रेडियो वार्तालाप और न्यू-मास्टर में चित्र-दर्शन का भी प्रबन्ध किया गया था।

एक किसान को सरकार से कुएँ के लिए अनुदान मिला, तो शराब की दूकान में गया और शराब पीने लगा। जैसे-जैसे जठर की दाह बढ़ती गयी, वैसे-वैसे और पीता रहा। १० रुपये की पी गया, उसको होश नहीं रहा। जेब से १०० रुपये का नया नोट निकालकर उसने दूकान के मालिक को दे दिया। दूसरे दिन सुबह

जब उसका नशा उतरा, तब जाकर १०० का नोट माँगने लगा, परन्तु दूकानदार ने कहा कि कैसा नोट और कैसी बात !

इसी प्रसंग को लेकर ग्राम-आयोजन शिविर में चर्चा हुई। ताजे ग्रामदान डुमखल के अगुवा शिविर समाप्त होने पर दूसरे ही दिन कार्यकर्ताओं को अपने गाँव ले गये और वहाँ ग्रामवासियों को इकट्ठा किया, जिन्होंने चर्चा-विचारणा के बाद तय किया :

१. जिस पुराने खराब गुड़ से शराब बनायी जाती है, वह गुड़ गाँव के सब घरों से एक सप्ताह में बाहर निकाला जाय।

२. अगले बुधवार तक शराब बनाने के मटके और साधन सब घरों से इकट्ठा हो जाना चाहिए।

३. एक एक समझदार व्यक्ति को ७-७ घरों की देखभाल करने की जिम्मेदारी सौंप दी गयी।

४. ग्राम-सभा के निर्णय के बाद जो पकड़ा जायगा, उस पर २५.०० रुपये का जुर्माना किया जायगा।

५. नजदीक के गाँववालों से कह दिया जाय कि वे हमारे गाँव में शराब बेचने न आयें।

बात पक्की करने पर भी, पुरानी आदत होने से अभी ७० प्रतिशत सफलता मिली है। ब्याह-शादी में बहुत शराब पी जाती है। झगड़े और मारपीट भी होते हैं। अब हर शादी के समय दिनकर भाई पहुँच जाते हैं और सरल भाषा में सप्तपदी समझाते हैं और शराब रोकते हैं।

यहाँ के ग्रामदानी गाँवो मे इस थोड़े से समय मे इस प्रकार काम हुआ :

१. ग्रामसभा की बैठकें होने लगीं। २. प्रार्थना-सभा का आयोजन होने लगा। ३. कार्यकर्ताओ ने परिवारों का व्यक्तिगत सम्पर्क साधना शुरू किया। ४. ग्राम-आयोजन-शिविर किया गया, ५. बालवाड़ियाँ शुरू की गयी है। ६. आश्रम-शाला प्रारम्भ की गयी। ७. ग्रामसभा के न्यायपंच द्वारा झगड़े निपटाने का काम शुरू हुआ। ८. डुमखल मे गाँवभर के समूह-भोजन का आयोजन किया गया। ९. पीने के पानी के १३ कुएँ खोदे गये। १०. पाँच बीघे धान की नयी जमीन बनायी गयी। ११. गोदाम बनाया गया। १२. गोलण मे सामूहिक चसाहत का प्रारम्भ किया गया। १३. कुओं के लिए सवालाख ईंटें बनायी गयीं। १४. डुमखल मे एक विवाह बिना खर्च के सिर्फ फूल-माला से किया गया। पहले शादी रात के समय हुआ करती थी, तो झगड़े होते थे। अब दिन मे करवाने का प्रयत्न किया जा रहा है। कुछ शादियाँ दिन में हुई हैं। १५. विद्यालय में किशोर शान्तिदल शुरू किया गया। १६. कणजोड, डुमखल मे सहकारी सोसाइटियाँ बनायी गयीं। १७. खाद का वितरण किया गया। १८. छोटी सिंचाई का सर्वे किया गया। १९. तेरह किसानों की फसल का आयोजन किया गया। २०. प्रयत्नो से आंशिक शराब-मुक्ति हुई, आगे प्रयत्न जारी है।

इस बालोड तालुका के बगल के इसी जिले के व्यारा तालुका के २००० की आबादीवाले ऊँचामाला गाँव ने भी ग्रामदान किया है। ग्रामदान करने से जिला पंचायत ने गाँववालो को कुएँ बनाने मे विशेष सहायता की। गाँववालो ने १९ कुएँ बनाये

हैं, जिसमे ११ पर रहँट लग गये हैं और ८ मे कम पानी निकला इसलिए गोट चलेंगे। खेती, खादी, शिक्षण, सहकार और संस्कार

लोक-अभिक्रम
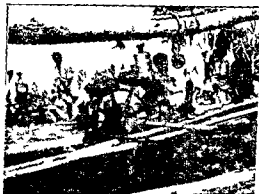
सूरत जिले के ऊचामाला ग्राम में
सामूहिक कूप निर्माण कार्य

इन पाँच बातो के आधार पर अपना कार्य आगे चलाने का गाँववालो ने सोचा है। बगल मे वेडछूआदूर की बहनो की संस्था है। उसका और यहाँ के तत्र कार्यकर्ता योगेन्द्र परीख का सहयोग भी यहाँ के निर्माण मे मिल सकेगा। ●

रंगपुर क्षेत्र

१. गुजरात के प्राचीन भक्त कवि प्रीतम का भजन है—'हरिनो मारग छे शूरानो, नहीं कायरनुं काम जो ने ....' 'शूर लोग ईश्वर की राह पर आगे बढ सकते हैं, कायर लोगों का वह काम नहीं है।' यही बात समाज-परिवर्तन के लिए लागू होती है। चाहे प्रहार की पद्धति हो या उपहार की, निर्भयता के बिना काम नहीं चलनेवाला है। व्यापारी, जमींदार, सरकारी कर्मचारी, राजनैतिक पक्षों का प्रचार और जनता का भयंकर अज्ञान—इन सभी के बीच गजब की हिम्मत के साथ, मृत्यु-भय से निडर होकर, सातत्य से हरिवल्लभ भाई पिछले १५ साल तक इस क्षेत्र में डटे रहे, तभी सफलता की कुछ झलक दिखाई देती है।

२. विनोबा-यात्रा के समय बारिश के दिनों में यहाँ यात्रापथ में आनेवाले छोटे बड़े अनेक नालों को पार करने के लिए रास्ता बनाने की हिम्मत जिला परिषद नहीं कर सकी। लेकिन यहाँ के आदिवासियों की श्रम सेना ने जो पराक्रम किया है, वह भुलाया नहीं जा सकता। भूमि-सेना जैसे स्रोतों को सतत चालू रखने का और वैसे अन्य स्रोत खोज निकालने का काम बड़ा ही महत्त्व का है। इसकी ओर विशेषरूप से ध्यान दिया जाना चाहिए।

३. सामाजिक अन्याय निवारण का कार्य सही तरीके से कोई संगठन करता हो, तो उसको अपना साथ देना चाहिए। प्रश्न की ओर उसको हल करने की पद्धति की गुणवत्ता देखनी चाहिए,

फिर चाहे वह किसी पक्ष की हो या किसी संगठन की, जैसे हरिभाई पारडी की भूमि-समस्या मे ईश्वरभाई को सहयोग देते रहे। जब हरिभाई स्थायी रूप से बैठने के लिए आये, तब रंगपुर क्षेत्र से साम्यवादी मित्रो ने जमीन का प्रश्न उठाया था। सारी स्थिति देखकर उन्होने साम्यवादियों का समर्थन करते हुए जाहिर किया कि पुकार किसी की भी हो, वह सही है। बाद में अपनी समन्वयात्मक पद्धति से काम करने के कारण सारा प्रश्न अपने ही हाथ मे आ गया।

४. छोटी-बड़ी संस्थाओं के लिए लोकाधार एक बड़ी चीज है। आनन्द-निकेतन लोकाधार के निश्चय से शुरू किया गया और आज सत्रह वर्षों से लोकाधार से चल रहा है, यह एक बड़ी ताकत है। खर्च का २० प्रतिशत क्षेत्र की जनता की ओर से मिल जाता है और बाकी धन साथी मित्र और अहमदाबाद, बम्बई जैसे बड़े शहरों से इकट्ठा किया जाता है।

५. विचार-प्रचार और ग्रामदान-प्राप्ति के लिए इस क्षेत्र मे लोकयात्राएँ निकाली जाती हैं, जिनमे ग्रामदानी गाँवो के प्रमुख, संस्था के कार्यकर्ता और विद्यार्थी मिलकर ३० से ५० तक की संख्या रहती है। इसका अच्छा प्रभाव पड़ता है। आस-पास के गाँवों के लोग भी पड़ाव पर सुनने-देखने को आते हैं। शैक्षणिक दृष्टि से यह चीज काफी महत्त्व की हो सकती है, बशर्ते कि इसका आयोजन व्यवस्थित ढंग से किया जाय।

६. पिछड़े क्षेत्रो के ग्रामदानी गाँवों मे जितने झगड़े ग्राम-सभाओं के द्वारा निपट सकें, निपटाने चाहिए, परन्तु बड़े झगड़े जो न निपट सकें, उनके लिए क्षेत्र मे यहाँ के जैसी लोक-अदालत की प्रथा विकसित करनी चाहिए। ऐसे आदिवासी या गैर-

आदिवासी क्षेत्रों में भी जहाँ ग्रामदान न हुए हों, इसका उपयोग एक हद तक लाभप्रद होगा।

७. रंगपुर एवं फेगाई क्षेत्र की ग्रामसभाएँ जब तक अपने सारे झगड़े अपने गाँवों में ही नहीं निपटा लेंगी, तब तक लोक-अदालत की आवश्यकता रहेगी ही। लोक-अदालत के कार्य को और अधिक शैक्षणिक बनाने की शक्यता दीख पड़ती है।

८. इस क्षेत्र में शराब का व्यसन छुड़ाने में बाहर से आये हुए कबीरपंथ के कुछ साधुओं ने बड़ा योगदान दिया। वे लोगों को 'भगत' (भक्त) बनाते हैं। शराब और मांस छोड़ना भगत बनने की शर्तें हैं। हजारों लोगों ने शराब छोड़ दी। इस प्रकार धार्मिक संस्थाओं को सामाजिक परिवर्तन के लिए जहाँ जहाँ हम प्रेरित कर सकें, करना चाहिए।

९. प्रश्न-विशेष को लेकर यहाँ समय-समय पर लोकशक्ति जागृत हो जाती है, उसका कुछ प्रभाव बाद में भी रहता है। परन्तु उसमें से कोई स्थायी शक्ति नहीं पैदा होती, इसलिए ग्रामसभाओं को व्यवस्थित करके उनमें स्थायी लोकशक्ति के उद्‌गम का प्रयत्न करना चाहिए।

१०. उत्पादन बढ़ने जैसी बातें इस पर निर्भर हैं कि किसानों को बीज, खाद, कर्ज आदि समय पर मिलता रहे। उसके लिए संस्था ने सारी व्यवस्था की और आज तक चल रही है, वह ठीक ही हुआ। अब ऐसा होना चाहिए कि धीरे-धीरे उनको ज्यादा जिम्मेवार बनाया जाय, उनमें शक्तिवाले लोगों पर सहकारी समितियों की और अन्य कामों की कुछ-न-कुछ जिम्मेवारी डाली जाय। उनके बच्चों को, युवकों को सहकारिता की तालीम दी जाय ताकि आगे वे पूरा भार सँभाल सकें।

११. कुछ गाँवों में भूमिहीनों को दी हुई जमीन वापस लेने की बात कुछ लोग सोच रहे हैं। कुछ गाँवों में ग्रामदान में पूरे परिवार शामिल नहीं हुए हैं। इन दोनों बातों की ओर ध्यान देने की जरूरत है।

१२. जो नये ग्रामदान हो रहे हैं, उनमें और पुराने ग्रामदान जिनमें वितरण नहीं हुआ है, उन सभी में समय पर वितरण हो जाना चाहिए।

१३. जहाँ ग्रामकोष व्यवस्थित ढंग से बनाये गये हैं, वहाँ गाँव के हित के सार्वजनिक कार्य करने में काफी सुविधा रहती है। देहातों की कर्ज की समस्या को हल करने के रूप में भी ग्रामकोष खडा हो रहा है, ऐसा कोरापुट के कई ग्रामदानों में देखा गया। यहाँ व्यवस्थित रूप से ग्रामकोष की शुरुआत की जाय, तो आगे जाकर वे सहकारी समितियों के अच्छे विकल्प साबित हो सकते हैं और तब गाँव अपनी पूँजी से आगे बढ़ सकेंगे। इस क्षेत्र में ग्रामकोष नहीं बन पाये हैं। बनाने का सोच लिया गया है। यह काम शुरू कर देना चाहिए।

१४. योजना लोगों की इच्छा और क्षमता के अनुसार बनती है, तो बाद में उनका उत्साह कायम रहता है। गजलावाट में रखे गये इंजन का उपयोग करके लोगों ने गेहूँ पैदा किया, किन्तु इंजन की देखभाल करने की कोई व्यवस्था नहीं हुई। गैसप्लाट की योजना चल रही है। वह गाँव के बड़े फायदे की भी है, परन्तु लोगों में उसके प्रति दिलचस्पी नहीं दिखाई दी। इस दृष्टि से नया नेतृत्व नहीं खड़ा करेंगे और सामूहिक जिम्मेवारी की भावना का विकास नहीं होगा, तो आगे बड़े कामों में दिक्कतें पैदा होंगी।

१५. प्रारम्भिक तौर पर यहाँ के पाँच ग्रामदानी गाँवों के लिए जो सिंचाई की योजना बनायी गयी है, उसको जल्दी कार्यान्वित करने से उन गाँवों की रोजगारी बढ़ेगी, परन्तु उसमे उपर्युक्त दृष्टि रखना जरूरी होगा, ताकि योजना का कार्य उनकी शिक्षा का माध्यम बने।

१६. इस क्षेत्र मे काफी कपास पैदा होती है। देहातों मे अर्धबेकारी भी काफी है। यहाँ स्वावलम्बी खादी के लिए बड़ा क्षेत्र है। पहले से इस संस्था की वृत्ति और कृति स्वतंत्र रही है और उसकी एक बड़ी कीमत है। अतः खादी कमीशन को इस संस्था के साथ सीधा व्यवहार रखने मे हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए।

१७. अन्यायों के विरोध में और ऐसे अन्य कामों मे अब तक हरिवल्लभ भाई सबसे आगे रहे। लोगों मे निर्भयता लाने की दृष्टि से वह आवश्यक ही था। बाद मे कहीं-कहीं लोगों द्वारा थोड़ा बहुत पराक्रम दिखाने के भी उदाहरण मौजूद हैं, किन्तु अब ऐसी प्रक्रिया चलनी चाहिए कि अन्याय के विरुद्ध उस गाँव के लोग उठ खड़े हों, उनकी मदद मे नजदीक के गाँवों के लोग भी दौड़ जायँ और वे अपनी शक्ति से अन्याय को खतम कर सकें और कार्यकर्ता शक्ति की कम जरूरत पड़े।

१८ हरिवल्लभ भाई और साथियों ने ग्रामदान-प्राप्ति के लिए अब कमर कसी है, तो यहाँ ग्रामदान अवश्य बढ़ेंगे। इसलिए निर्माण कार्य की एजेन्सियाँ भी बढ़ानी होंगी, क्योंकि संस्था के चंद साथियों से सारा काम नहीं चल सकेगा। इसके लिए लोकभारती और विद्यापीठ जैसी संस्थाओं के स्नातकों को, अध्यापन के छात्रों को आह्वान करना चाहिए और क्षेत्र के व्यापारी तथा

पढ़े-लिखे लोगों का तथा पंचायत विकास आदि विभागों के क्षेत्र-कर्मचारियों का सहयोग प्राप्त करना होगा। कस्बों के व्यापारी, बड़े जमीनवाले और अन्य शिक्षित लोग समझेंगे कि सुलभ ग्रामदान में उनकी सुरक्षा और सबका भला है, तो उनका सहयोग आसानी से मिल सकेगा।

१९. जुगतराम भाई दवे, बबलभाई महेता, नवलभाई शाह आदि यहाँ समय-समय पर आकर १५–२० दिन रहें और उनकी उपस्थिति में कार्यकर्ताओं का, ग्रामदानी गाँवों के प्रमुखों का और युवकों का प्रशिक्षण और अन्य कार्यक्रम चलाये जायँ, तो उपयोगी रहेगा।

गोठडा

१. यहाँ विकास विभाग के उत्साही ग्रामसेवक वाडीभाई ने काफी काम किया है। जहाँ-जहाँ सरकारी विभागों में इस प्रकार के आदमी नजर आयें, वहाँ उनका सहयोग ग्रामदानी गाँवों के निर्माणकार्य में लेने का प्रयत्न करना चाहिए।

२. जहाँ ऐसे उत्साही कर्मचारी न मिलें, वहाँ भी ग्रामदानी गाँवों के लिए अच्छी खाद, उन्नत बीज, सुधरे औजार प्राप्त हों, शिक्षा आदि की सुविधा मिले, समाज-कल्याण की योजनाएँ तथा अन्य योजनाओं का लाभ मिले, वैसा संबंध प्रशासन के साथ जोड़ देना चाहिए, चाहे हम स्वयं निर्माण की जिम्मेवारियाँ न उठायें।

३. ग्रामदान होने के बाद गोठडा का उत्पादन बढ़ा। वहाँ के किसानों में जो समझदारी और क्षमता आ गयी है, उस दृष्टि से उत्पादन और भी बढ़ेगा, परन्तु उसके साथ साथ सामूहिक भावना

जितनी बढ़नी चाहिए, उतनी नहीं बढ़ी है। समय समय पर सामूहिक कार्यक्रमों का आयोजन करके और गाँव के 'आखिरी आदमी को' भी अपने साथ लेकर चलना है, वैसा सामूहिक भाव बढ़ाने की प्रक्रिया चला सकेंगे, तो गोठडा गैर-आदिवासी ग्रामदान का एक अच्छा उदाहरण पेश कर सकेगा। भट्ट साहब के जाने के बाद जिले की निर्माण समिति को इसकी ओर विशेष ध्यान देना होगा।

४. जिले में मोतीभाई चौधरी, सांकलचंद भाई, रिखब भाई, करशन भाई, रति भाई आदि जैसे अनुभवी और शक्तिशाली व्यक्ति और बालम-आश्रम जैसी संस्थाओं के कारण महेसाणा जिले की ग्रामदान की निर्माण-योजना अच्छी तरह आगे बढ़ेगी, ऐसा दीखता है।

रामगढ़

इस गाँव के निर्माण कार्य में आज तक कई चढ़ाव-उतार आये हैं। अब यहाँ दृढ़ मनोबलवाला, आर्थिक मामलों में प्रामाणिक तथा जिसको लोकमानस का गहरा परिचय हो, वैसा अनुभवी कार्यकर्ता यहाँ रखना आवश्यक है।

वनस्थली

१. इस क्षेत्र के ग्रामदानी गाँवों में व्यवस्थित ढंग से और वैज्ञानिक रूप से ग्राम-निर्माण का कार्य शुरू हुआ है। यहाँ इसी तरह से काम चलता रहेगा, तो ये गाँवों के ग्राम-स्वराज्य के अच्छे नमूने बन सकेंगे। साथ में विद्यालय होने से निर्माण-कार्य में विद्यालय की शक्ति लगेगी और विद्यालय की तालीम में सजीवता का प्रकाश फैलेगा।

२. विभिन्न प्रदेशों में देखा गया कि ज्यादातर जगहों में हमारे कार्यकर्ताओं को ग्राम-आयोजन करना आता नहीं। इसलिए आयो-

जन के मुताबिक कार्य होता नहीं है। इस क्षेत्र की सघन क्षेत्र-योजना (Intensive Area Scheme) में पहले से ग्राम-आयोजन करके काम किया गया और उसके परिणामो का लेखा-जोखा किया गया। देश मे ग्रामदानो की निर्माण-योजना में इस तत्त्व को दाखिल करना चाहिए।

३. शिविर का मतलब भाषण नहीं है। शिविर पद्धति का भी यहाँ के पूरे क्षेत्र मे अच्छा विकास किया गया है। शिविर को शिक्षाप्रद और "अर्थसभर" बनाने की कला हाथ में आयी है।

४. सूरत जिले मे नयी तालीम की दृष्टि से शिक्षा का जो व्यापक काम चल रहा है, भूमि-सुधार-कानून का लाभ किसानो को पहुँचाने के लिए जो काम किया गया है, जंगल सहकारी समितियों के द्वारा और "हलपति संगठन" के मारफत आर्थिक सामाजिक उन्नति के जो अनेक काम जुगतराम भाई के मार्गदर्शन मे हुए हैं और कार्यकर्ताओं तथा विद्यार्थियों की जो सचमुच एक बड़ी फौज विद्यमान है और जिलेभर मे अनेकविध संस्थाएँ छायी हुई हैं'—उसकी वजह से यहाँ अनेकानेक ग्रामदान होने की सम्भावना भरी पडी है। उस शक्ति को खोलने की देर है कि ग्रामदान का प्रवाह खुल पड़ेगा। ●

गुर्जर देश की परंपरा और झाँकी : ११ :

सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

"हरिना जन तो मुक्ति न मागे, मागे जनमो जनम अवतार रे।
नित सेवा नित कीर्तन ओच्छव, निरखवा नंदकुमार रे॥

गुजरात का प्राचीन भक्त कवि नरसिंह मेहता गाता है कि हरि का जन मुक्ति नहीं चाहता है, वह मृत्यु के बाद हर बार पृथ्वी पर जन्म लेना ही चाहेगा, क्योंकि पृथ्वी पर आने से भगवान् के नित्य दर्शन, उनकी नित्य सेवा और उनका नित्य कीर्तन कर सकते हैं, आनन्द-उत्सव मना सकते हैं। इस प्रकार की भक्ति का अवसर ब्रह्मलोक में, स्वर्ग में तो है नहीं, जो पृथ्वी पर सुलभ है। पुण्य करने से अमरापुरी तो मिल जाती है, किन्तु पुण्यक्षय होते ही चौरासी के चक्कर में भटकना पड़ता है। इसलिए भक्ति बड़ी चीज है।

भूतल भक्ति पदारथ मोटुं ब्रह्म लोकमां नाहीं रे।
पुण्य करी अमरापुरी पाम्या, अंते चौरासी माहीं रे॥

नागर जाति ब्राह्मण से भी ऊँची मानी जाती है। गुर्जर भूमि (गुजरात) के जूनागढ़ शहर में उस नागर जाति में नरसिंह मेहता का जन्म हुआ। उस जमाने में अस्पृश्यों को अत्यंत घृणा से देखा जाता था। लेकिन कट्टरता की पराकाष्ठा के उन दिनों में भी नरसिंह मेहता अस्पृश्यों के बीच जाकर भगवद्भजन करते थे और

उनके हाथ का प्रसाद ग्रहण करते थे। उनको जाति से बाहर कर दिया गया और काफी कष्ट दिये गये, तो मेहता ने उसको ईश्वर का प्रसाद मानकर अस्पृश्यों के बीच जाना चालू ही रखा। ब्रह्मानंद ने गाया :

रे शिर साटे नटवरने वरिये।
रे पाछां ते पगलां नव भरिये॥

हम अपना सिर देकर ईश्वर के साथ संबंध जोड़ेंगे, कभी पीछे कदम नहीं रखेंगे :

"प्रेम पंथ पावकनी ज्वाला, माळी पाछा भागे जोने।
मांही पड्या ते महासुख माणे देखणहारा दाझे जोने॥"

परमेश्वर के साथ प्रेम करने का पंथ अग्नि की ज्वाला के समान है, जिसे देखकर ज्यादातर लोग वापस भाग निकलते हैं, परन्तु उस प्रेम-ज्वाला में जो साहस करके कूद पड़ते हैं, वे ही महासुख पाते हैं और देखनेवाले ज्वाला के ताप से झुलस रहते हैं—ऐसी प्रेम-बाँसुरी कवि प्रीतम ने बजायी, तो किसीने शौर्य का शंख फूँका :

"ना चाहुं जग-कीर्ति मेवा, ना वैकुण्ठे वास,
सिद्धि मळो, जीवन बलि हो वा, ए अनोखी आश
एक ज ए अभिलाष।"

इस प्रकार गुजरात की प्राचीन कविता प्रेम, शौर्य और भक्ति-भाव से भरपूर है।

समाज-जीवन के प्रमुख प्रवाहों से कवि को प्रेरणा मिलती है और कवि के अंतरतम प्रवाह के स्फुरण से समाज-जीवन प्रेरित

होता है। इस न्याय के अनुसार भक्ति-काव्य युग के पहले का और बाद का गुर्जर-भूमि का ऐतिहासिक-जीवन भी प्रेम, शौर्य और भक्ति से अंकित रहा। वहाँ के लोक-जीवन में जीवन को झकझोर देनेवाली अनेक प्रेम-कथाएँ, शौर्य गाथाएँ और भक्ति-वार्ताएँ भरी पड़ी हैं। मानव-जीवन के 'सत्यं, शिवं और सुन्दरम्' का प्रकाश फैलानेवाले लोक-जीवन के प्रसंग-मणियों को भूतकाल की भूमि में से खोद निकालने का काम गुजरात के अर्वाचीन लोक-कवि झवेरचंद मेघाणी ने किया है।

गुजरात की ऐसी प्राचीन परंपरा के परिपाक में से महर्षि दयानंद और गांधीजी आदि महापुरुष प्रकट हुए।

गुजरात के गाँव-गाँव मे बिलकुल बीच में चौरा या ठाकुर मंदिर होता है, जिसमे राम-सीता-लक्ष्मण की मूर्तियाँ होती हैं और गाँव की देहरी के पास हनुमान या शिवजी का मंदिर होता है। वैष्णव और जैनधर्म भी गुजरात मे काफी फैले हैं। इन सभी स्थानों में शाम को आरती-वंदना के समय सहज रूप से सामूहिक लोक-प्रार्थनाएँ होती हैं। बीच के काल मे धार्मिक मान्यताओं मे काफी रूढ़िग्रस्तता, दंभ और कई नुकसानदेह चीजें आ गयी थीं। इन बुराइयों को हटाने का काम गुजरात मे गांधीजी के पूर्वकाल मे भी एक हद तक काफी अच्छा हुआ। दुर्गाराम महेता ने धार्मिक और सामाजिक सुधार का झंडा उठाया और उसके लिए काम करनेवालों की एक अच्छी मंडली बना दी तथा सन् १८४४ मे 'मानव-धर्म सभा' की स्थापना की। करशनदास मलजी ने धार्मिक बुराइयों के खिलाफ विद्रोह किया। उसके बाद प्रतिभासंपन्न रसज्ञ कवि नर्मद ने समाज-सुधार का बड़ा आंदोलन चलाया और नयी वैचारिक जागृति पैदा कर दी। उनके द्वारा स्थापित बुद्धिवर्धक-सभा गुजरात के नव-चैतन्य का केन्द्र बन गयी। सन् १८६७ में बंबई

में और सन् १८७१ में अहमदाबाद में 'प्रार्थना-समाज' की स्थापना हुई। इसमें भी समाज-सुधार का अच्छा काम हुआ। बाद में तो कवि कांत, मणिलाल द्विवेदी, गोवर्धनराम त्रिपाठी, आनंदशंकर ध्रुव तक कई लोग निकले। नीलकंठ, ध्रुव और दिवेटिया आदि परिवारों ने एक-एक दो-दो पीढ़ी तक समाज-सेवा की। उसी प्रकार स्त्रियों में भक्त कवियित्री गोरीबाई और पूरीबाई से लेकर वर्षों तक 'स्त्री-बोध' नामक मासिक पत्र के माध्यम से बहनों में नया प्रकाश फैलानेवाली पुतलाबाई काबरजी और यूरोप के देशों में घूमकर भारत के स्वातंत्र्य की माँग को दुनिया के सामने रखने का काम करनेवाली पारसी बानु भिखाईजी कामा तक का एक सुंदर इतिहास है।

इसी प्रवाहधारा में नरसिंह महेता के जुनागढ़ से थोड़ी दूर सुदामापुरी (पोरबंदर) में ही मोहनदास करमचन्द का जन्म होता है, जो आगे जाकर 'महात्मा गांधी' के नाम से समचे देश और दुनिया के लिए गौरवपूर्ण व्यक्तित्व बन जाता है।

गांधी-युग की प्रेरणा

देश में स्वराज्य का तूफान खड़ा हुआ, उस समय गुजरात में भी बारडोली, खेड़ा और राजकोट के सत्याग्रह हुए। अहमदाबाद की साबरमती नदी के तट पर साबरमती-आश्रम से ही ऐतिहासिक दांडीकूच हुआ था। गुजरात के युवकों में, गुजरात के किसानों ने उन आन्दोलनों में बड़ा जौहर दिखाया था और विराट भारत-देश को प्रेरित करने में वे भी निमित्त बने थे।

गांधीजी ने कहा था कि देखने में तो मैं एक राजनैतिक व्यक्ति हूँ, परन्तु वास्तव में तो मैं एक आध्यात्मिक मनुष्य ही हूँ।

उनके व्यक्तित्व और उससे उद्भूत स्वराज्य आन्दोलन से समाज-जीवन के सभी क्षेत्र प्रभावित हुए–राजनीति से लेकर शराबबंदी तक। उनकी इस नवीन कार्य-प्रणाली से दुहरा काम होता चला—स्वराज भी नजदीक आता गया और देश का निर्माण भी होता गया। गुजरात में इस प्रक्रिया ने अपना थोड़ा विशेष प्रभाव दिखाया, ऐसा लगता है।

शिक्षा-जगत् मे गिजुभाई, नानाभाई, जुगतराम भाई, हर-भाई; विचार और साहित्य के क्षेत्र में किशोरलाल भाई, काका साहब, पंडित सुखलालजी, सुंदरम्, रामनारायण पाठक, मेघाणी, उमाशंकर जोशी; कला क्षेत्र में रविशंकर रावल, रसिकलाल परीख, छगनलाल यादव और कनु देसाई; लोक-सेवा में ठक्कर बापा, रविशंकर महाराज, जुगतराम दवे, बबलभाई महेता, ईश्वरभाई देसाई, गंगाबहन, मीठुबहन पीटीट और सरलादेवी साराभाई; खादी में—शंकरलाल बैंकर, लक्ष्मीदास आशर, कृष्णदास गांधी, नारायणदास गांधी, नागरदास दोशी; मजदूर क्षेत्र में अनसूया बहन, नंदाजी, खंडुभाई और श्यामप्रसाद वसावडा; किसान क्षेत्र मे जुगतराम दवे, इन्दुभाई और ईश्वरभाई; राजकीय क्षेत्र में—सरदार वल्लभभाई, मोरारजी भाई, इन्दुलाल याज्ञिक, दरबार गोपाल दास, बलवन्त भाई महेता और ढेबरभाई, आदि। और बापू की प्रतिच्छायास्वरूप महादेवभाई देसाई—ऐसे अनेक क्षेत्रो में अनेक नामी–अनामी नक्षत्र स्वराज्य गगन में दमकने लगे थे और इनके अलावा नयी दृष्टि से सम्पन्न एक नयी पीढ़ी तैयार हुई। स्वराज्य ने क्या-क्या नहीं दिया ?

स्वराज्य के आन्दोलन की वजह से ही गुजरात को साबर-मती-आश्रम मिला, गुजरात विद्यापीठ मिला, गुजरात के वन-

वासियों को वेड़छी मिली और भील-सेवा मंडल मिले। बोचासण, थामणा जैसे कई ग्रामसेवा केन्द्र मिले।

सौराष्ट्र को दक्षिणामूर्ति मिली, जिसमें से ग्राम दक्षिणामूर्ति और आज की लोक-भारती बनी, कुंडला का ग्राम-स्वराज्य-मंडल मिला और सौराष्ट्र-रचनात्मक-समिति मिली। स्वराज्य से सौराष्ट्र को सबसे बड़ी भेंट मिली, पहले के छोटे-छोटे २०२ राज्यों के बदले में पूरे सौराष्ट्र का एक राज्य। और बाद में वह सौराष्ट्र भी विलीन होकर गरवी गुर्जरी का—गुर्जरभूमि का एक राज्य आज का गुजरात।

उन्नीस साल के स्वराज्य-काल में गुजरात में अन्न और उद्योग का उत्पादन बढ़ा; शिक्षा, सिंचाई, बिजली आदि अनेक चीजें बढ़ीं। इन सबके साथ आबादी भी बढ़ी। लोगों में स्वतंत्र मनोभाव का एक सीमा तक विकास भी हुआ। गुजरात अपनी गति से आज आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा है।

यों तो गांधीजी किसी खास जगह के नहीं थे, सारे विश्व के थे। गांधीजी भी किसी स्थान विशेष को नहीं, प्रत्युत सारे जगत् को अपना मानते थे। फिर भी उनका जन्म हुआ गुजरात में। इस बात को लेकर विनोबाजी कहते हैं कि गांधीजी का जन्म गुजरात में इत्तफाक से नहीं हुआ। सारे भारत में गुजरात निरामिषाहार में प्रथम है। गुजरात के इस जीव-दया के संस्कार को गांधीजी के वहाँ पैदा होने का एक कारण वे बताते हैं। जो हो, गुजरात ने गांधी की आत्मा को सींचा और गांधीजी ने विश्व में गुजरात का नाम उज्ज्वल किया।

सर्वतोभद्र लोकक्रान्ति करने का, गांधी के ग्राम-स्वराज्य के सपने को साकार करने का प्रयास प्रारम्भ में भूदान, बाद में ग्राम-

दान और अब प्रखण्ड-दान के रूप में देश में चल रहा है। वह उत्तरोत्तर तीव्र और गतिशील होता जा रहा है। इस आन्दोलन में गुजरात के भूदान-ग्रामदान का इतिहास कम रोचक नहीं है।

भूदान-ग्रामदान का सन्दर्भ

सन् १९५३ के उन दिनों की बात है। गुजरात के तपोधन रविशंकर 'महाराज' चीन की भूमिक्रान्ति देखकर आये थे। यहाँ आने पर जमशेदपुर के नजदीक चांडिल के सर्वोदय-सम्मेलन में भूदान यज्ञ की अहिंसक भूमिक्रान्ति की फिजा उन्होंने देखी। वे गुजरात पहुँचे। जाहिर हो चुका था कि वे भूदान के लिए निकलनेवाले हैं। परन्तु निकल पड़ने में महाराज के मन में थोड़ी-सी हिचकिचाहट थी। उतने में एक वृद्धा माता मिली। उसने कहा : 'महाराज, सुना है कि गरीबों के लिए आप भूमिदान माँगने निकलनेवाले हैं, अभी आप निकले नहीं हैं ? मैं तो आपकी राह देख रही हूँ। मुझे अपनी जमीन भूमिहीनों के लिए दान देनी है।' महाराज का रहा-सहा संकोच मिट गया और महाराज की परिक्रमा शुरू हो गयी। युवक नारायण देसाई की भी भूदान-यात्रा शुरू हो गयी थी। जुगतराम दवे और बबलभाई निकले, हरी व्यास, खजी भाई और करशन भाई निकले, छोटे-बड़े अनेक साथी निकले। पदयात्राओं के दौरान सैकड़ों गाँवों में हृदय को भरदेनेवाले अनेकानेक ऐसे पावन प्रसंग बने, जिनसे छोटे-बड़े कार्यकर्ताओं के दिल की श्रद्धा तो मजबूत बनी ही, बल्कि उन प्रसंगों ने दिखा दिया कि ऊपर के जीवन व्यवहार में और राज-नीति में चाहे जिनका बोलबाला हो, परन्तु जनता के अंतरंग-

गुजरात के ग्रामदान आंदोलन में लगी हुई युवक कार्यकर्ताओं की मंडली को विशेष प्रेरणा देती है। जब गोठडा निवासियों ने उनके और भट्ट साहब के कहने पर ग्रामदान किया, तो डॉक्टर ने सोचा कि हमारे कहने पर ग्रामवासियों ने अपनी सारी भूमि की व्यक्तिगत मालिकी छोड़ दी, तब मुझे ग्रामदान-आन्दोलन के कार्यकर्ता के नाते तनिक भी निजी संपत्ति रखने का क्या अधिकार है ? बस, बची-खुची पूँजी भी बहा दी—

पानी बाढ़ो नाव में घर में बाढ़ो दाम ।
दोनों हाथ उलीचिये यही सयानो काम ॥

बिलकुल साधारण परिवार में से आगे आकर केरल और असम तक अपना संबंध जोड़नेवाले जगुभाई, काकुभाई और कपड़े की मिलों के मजदूरों में से अच्छे कार्यकर्ताओं के रूप में आज तक काम करनेवाले भागजीभाई और भगुभाई से लेकर बंबई की अपनी अच्छी नौकरियाँ छोड़कर पिछले दस वर्षों से गुजरात में काम करनेवाली हर्षविलास बहन और कांता बहन तक किन-किन के नाम लिये जायँ ? उस समय के 'भूमिपुत्र' के प्रबुद्ध संपादक प्रबोध चौकसी, नारायण देसाई, चुनीभाई वैद्य और आज के संपादक कांतिशाह आदि से लेकर एक किसान की हैसियत से आंदोलन की शुरुआत से आज तक भूमिक्रांति का सतत संदेशा फैलानेवाले बड़ावली के खेंगार, कच्छ के वृद्ध वालजी बापा, मणिलाल संघवी, छगन भाई अहमदाबादी, सौराष्ट्र के मोहन भाई मांडवीया और मोहन भाई मोदी, अरुणभाई और मीरा बहन, पोपट भाई और लालजीभाई, बजुभाई शाह, जयंती भाई मालधारी और श्री विट्ठलदास बोदाणी, भाटलिया भाई और मुनि श्री संतबालजी तक के कई लोगों ने अपनी समय-

शक्ति इस आंन्दोलन में लगा दी। उधर उत्तर में गुजरात के अमृत मोदी, पद्मावहन भावसार, रतिभाई जोशी, डॉ० वल्लभभाई से लेकर दक्षिण गुजरात के हर्षकांत वोरा, नानु मझमूदार और जगदीश लाखिया, डॉ० वल्लभभाई पटेल और चिमनभाई दरजी तक के अनेक साथियों ने मिलकर गुजरातभर में भूदान-ग्रामदान आन्दोलन खड़ा किया और चलाया। कई रोमांचक घटनाएँ, कई प्रेरक गाथाएँ इन सभी के पुरुषार्थ के पेट में ताने-बाने जैसी ओतप्रोत हैं। प्रत्यक्ष और परोक्ष में प्राप्ति तो बहुत हुई, उसमें से आँकड़ों में जो प्राप्ति हुई, वह यहाँ दी जा रही है :

गुजरात में भूदान

२०००० दाताओं से प्राप्त भूमि	७८५३० एकड़
सौराष्ट्र सरकार से प्राप्त भूमि	२५००० ,,
कुल ,, ,,	१०३५३० एकड़

वितरण

दाताओं से प्राप्त भूमि में से वितरण	३६५७० एकड़
सरकार से प्राप्त भूमि में से वितरण	१४४१४ ,,
कुल भूमि वितरण	५०९८४ एकड़

यह भूमि १०२७० परिवारों में वितरित की गयी।

बाकी बची जमीन निम्न कारणों की वजह से वितरित नहीं की जा सकी :

१. विवादास्पद मालिकी।

२. दाता का कब्जा नहीं रहा।

३. राज्य के कानून की वजह से दो एकड़ से छोटे टुकड़ों का वितरण नहीं हो सका।

४. टेनेन्ट्स के हाथों में हैं।

गुजरात में जिलेवार ग्रामदान

ग्रामदान : मई '६५ के गोपुरी के तूफान के निश्चय के बाद गुजरात में अब तक राज्य के विभिन्न जिलों में कुल १२ सामूहिक पदयात्राएँ हुईं, जिनमे कुल १४६ टोलियों ने १३८५ देहातों में घूमकर ९८ ग्रामदान प्राप्त किये। ३१ अक्तूबर '६६ तक गुजरात में कुल ४९३ ग्रामदान हैं। और अब तो २ प्रखंडदान भी हो गये हैं। ३१ दिसम्बर १९६६ तक निम्न स्थिति है :

जिला	ग्रामदान	प्रखण्डदान	तालुकादान
बड़ोदा	२९२	१	१ नसवाडी
महेसाणा	६८	—	—
सूरत	२४६	२	१ धरमपुर
साबरकांठा	३६	—	—
बनासकांठा	८८	—	—
भरूच	४	—	—
अहमदाबाद	७	—	—
पंचमहाल	१	—	—
राजकोट	१	—	—
कच्छ	७	—	—
सुरेन्द्रनगर	१	—	—
कुल	७५१	३	२

ता० १५-१२-'६६ तक नसवाड़ी तहसील की स्थिति इस प्रकार है :

	कुल	शामिल
गाँव	२२०	१८७
आबादी	५६,६५२	४४,३६३
जमीन एकड़	१३८,८४७	१०४,४८३

ता० १५-१२-'६६ तक रंगपुर विस्तार में २८८ ग्रामदान हुए हैं।

साधनदान : रविशंकर महाराज की यात्रा में साधनदान के लिए जो २९१७७०-५७ रु० की रकम प्राप्त हुई, उसमें से भूदान की जमीन प्राप्त होने से भूमिहीनो में से नये किसान बने हुए ३०३ परिवारों में इस तरह विनियोग किया गया।

३८ कुँए, १५२ बैल, ४१ हल और १९६ खेती के औजारों की सहायता की गयी।

	रु० पै०
खेती के औजारों की कीमत	१२०८२८–३५
खाद के लिए	१३४४–५५
बीज के लिए	५४७–३४
भू-सुधार के लिए	१२९४३–८०
कुल खर्च रकम	१३५६६४–०४

सर्वोदय-पात्र : बडोदा शहर में सर्वोदय-पात्र का कार्य सन् १९६१ से चल रहा है।

'६१-'६२ में ६५०–पात्रों की स्थापना से शुरुआत हुई।
'६४-'६५ मे ८०० पात्र और रखे गये।

इस तरह लगभग १३०० पात्र चल रहे हैं। पिछले दो सालों मे इससे ७८०० रुपये प्राप्त हुए। यह रकम जिला सर्वोदय-मंडल के कार्य मे खर्च होती है। काकुभाई और अरुणभाई ने ये पात्र चलाने की जिम्मेदारी उठायी। उन्होंने पात्र रखनेवाले परिवारों से सतत् संपर्क रखा और उनकी प्रत्यक्ष सेवा के काम भी करते रहे। धोलेरा कस्बे मे नंदलालभाई अपने क्षेत्र के सर्वोदय पात्र पर आधारित रहकर काम कर रहे हैं। इस समय गुजरात में कुल ३००० पात्र चल रहे हैं।

पत्रिका तथा साहित्य प्रकाशन : पिछले तेरह साल से 'भूमि-पुत्र' सर्वोदय का विचार-संदेश हजारों गाँवो में पहुँचाता रहा है। ४००० ग्राहक संख्या से उसकी शुरुआत हुई और २२००० तक पहुँची। उसकी औसत वार्षिक ग्राहक संख्या १०००० रही है। उल्लेखनीय बात यह है कि पिछले ८९ सालों से कांता-बहन अकेली हरसाल चार-पाँच हजार ग्राहक आन्दोलन के अन्य कार्यों के अलावा बना लेती हैं।

यज्ञ-प्रकाशन ने अब तक ६५ पुस्तक-पुस्तिकाएँ प्रकाशित की हैं। साहित्य बिक्री कुल रु० १,९३,८१५-९१ की हुई है। साहित्य प्रचार और भूमिपुत्र के प्रचार के बारे मे एक और बात उल्लेखनीय है कि अहमदाबाद बड़ोदा आदि के मिल, कारखाने आदि ने अपने कर्मचारियों के लिए ऐसी सुविधा प्रदान की कि खरीदे हुए साहित्य की आधी रकम कंपनी देगी। इस योजना से सर्वोदय-साहित्य हजारों श्रमिकों तक पहुँच सका।

कार्यकर्ता : गुजरात मे आज पूरे समय के ३५ कार्यकर्ता भाई-बहन हैं। ४१० लोक-सेवक और १८५ शांति सैनिक हैं। '५१ से '५८ तक अलिखित संगठन के रूप में सबने मिलकर काम

चलाया—शुरू मे भूदान-समितियों के रूप में और बाद मे 'सप्तमी सभा' के अभिनव प्रयोग के रूप मे। फिर सन् १९५९ से गुजरात सर्वोदय-मंडल बना और उसके मारफत काम चल रहा है। मंडल के कार्यकर्ताओं का निर्वाह बंबई, अहमदाबाद और थोड़ा बहुत अन्य जगहों के शुभेच्छु लोगों की आर्थिक सहायता से चल रहा है।

पिछले पन्द्रह वर्षों से गुजरात मे एक छोटा-सा मंडल इस काम में एकाग्रता और सातत्य से लगा रहा और समय-समय पर श्री दादा धर्माधिकारी, जयप्रकाशजी और धीरेनभाई वहाँ जाकर कार्यकर्ताओं को प्रेरणा देते रहे, इसीलिए इतना प्रत्यक्ष परिणाम आया। इस आंदोलन के विचार, संदेश और कार्यक्रमो से जो स्थूल रूप से न दिखनेवाली, परोक्ष या आंतरिक निष्पत्ति हुई होगी, उसका नाप-तौल करना कठिन काम है, परन्तु बेशक वह प्रत्यक्ष से कई गुना ज्यादा ही है।

बबलभाई महेता, डॉ॰ जोशी और हरविलास बहन की समन्वयात्मक पद्धति और हरिवल्लभ परीख जैसे साथियों की सक्रियता और अपने क्षेत्रों मे प्रभाव—दोनों की मिली-जुली एक प्रक्रिया चलती रही। सौराष्ट्र मे अमुलखभाई, केशुभाई आदि अब सक्रिय होकर लगे हैं और मनुभाई पंचोली और वजुभाई शाह की विधायक शक्ति काफी मात्रा मे मिल रही है—इस प्रकार गुजरात के वैचारिक और व्यावहारिक क्षेत्र में ग्रामदान की एक छोटी सी जड़ अवश्य जमी है।

इसमे अगर गुजरात विद्यापीठ, लोकभारती और शारदा ग्राम की शिक्षासंस्थाएँ, वेड़छी, वालम गुंदी और शाहपुर की आश्रम-संस्थाएँ, सावरकुंडला, चलाला की खादी-संस्थाएँ प्रत्यक्ष हिस्सा

लेने लगती हैं, उमाशंकर भाई और मकरंद भाई जैसे आत्मजनों के आशीष आन्दोलन को मिलते हैं, स्नेहरश्मि पेटलीकर, पन्नालाल और पीताम्बर पटेल आदि का सक्रिय सहयोगात्मक चिंतन चलता है और वैसी विभिन्न शक्तियाँ आ मिलती हैं, तो '५४ से '५७ तक के काल मे गुजरात मे भूदान की जैसी हवा गूँज रही थी, वैसा अब गुजरात के गगन मे ग्रामदान की तूफानी क्रांति का जयघोष भी गूँजने लगेगा।

नेताओं की गुजरात से अपेक्षा

विनोबा को इतनी जल्दी क्यों है ?

इस प्रवृत्ति को अब विनोबा ने 'तूफान' का नाम दिया है। परिस्थिति के अनुरूप ही यह शब्द निकला। इसका महत्त्व भी हम लोगों को समझ लेना चाहिए। शिक्षा का कार्य हो तो वह धीरे-धीरे चले, यह समझ में आता है। परन्तु जब आग लगी हो, तब आहिस्ते नहीं चल सकता, तब तो जल्दी से दौड़ना पड़ता है। अब भी अगर हम नहीं चेत जायेंगे, तो बाद में पश्चात्ताप करने की बारी आयेगी। आज गति से, तीव्रता से काम करने की वेला आयी है, यह परिस्थिति को पहचाननेवाले जानते हैं।

गांधीजी की दी हुई शिक्षा का विचार करने पर हमें दीखता है कि अहिंसा के रास्ते पर क्रान्ति करने के लिए हम ज्यादा योग्य हैं। देश में जाने-अनजाने हिंसा की तैयारियाँ जोरों से हो रही हैं। ईश्वर ने हमको आखिरी मौका दिया है। गांधीजी के ही मार्ग पर अपनी विशिष्ट प्रतिभा से विनोबा ग्रामदान-आन्दोलन चला रहे हैं। उसमें त्याग नहीं, भरा-पूरा दूरंदेशी से परिपूर्ण स्वार्थ है, ऐसा समझकर हम साथ दें। लोगों के चित्त आज विह्वल हो उठे हैं। इधर-उधर दंगे-फसाद हो रहे हैं। प्रजा भड़क उठने के लिए तैयार हो जाय, वैसे दिन बहुत नजदीक आ रहे हैं। यह बात जिनके ध्यान में आयेगी वे ही नेतृत्व कर पायेंगे।

इसलिए विनोबा के हृदय में जो तीव्रता पैदा हुई है, वह कार्यकर्ताओं के हृदय मे उतरनी चाहिए। कार्यकर्ताओं मे हृदय की, बुद्धि की तीव्रता आ जायगी, तब काम खूब आगे बढ़ेगा।

साबरमती आश्रम
१७-८-'६६

—काका कालेलकर

एशियाई समाजवाद

जो शोषण मिटाना चाहता है, उसको मालिकी मिटाये बिना चारा नहीं। मिल्कियत की वर्तमान प्रथा में क्रांति किये बिना चलेगा नहीं। एशिया में किसान बहुत हैं। सुलभ ग्रामदान का विचार आया, तब लगा कि खेती-प्रधान एशिया में समाजवाद लाने की अहिंसक चाबी इसमें पड़ी है। हमारे देश में ८० प्रतिशत लोगों का जिस साधन पर निर्वाह है, उसको खरीद-बिक्री के क्षेत्र में से बाहर निकाल देते हैं, तो बाकी क्या रह जाता है ? भूमि पर किया गया श्रम और उसके फल। सुलभ ग्रामदान एशियाई समाजवाद की नींव का पत्थर है, जिस पर ग्रामीण और सहकारी समाज की इमारत बनायी जा सकती है। उस समाज में छोटी-छोटी इकाइयाँ होंगी और प्रशासन का विकेन्द्रीकरण होगा। दुनिया के विचारक भी अब विकेन्द्रीकरण को मानते हैं। खेती और ग्रामोद्योग-आधारित इकाई नहीं बना पायेंगे, तो समाज-रचना रहेगी, मानव नहीं रहेगा, राज्य रहेगा, नागरिक नहीं रहेगा। सम्पत्ति कहीं भी अनियंत्रित रूप से इकट्ठी न हो जाय, यह देखना पड़ेगा और किसान स्वतन्त्र नागरिक के रूप में काम कर सके, यह भी देखना होगा। ग्रामदान में ये दोनों बातें सधती हैं।

टाटा, बिरला जैसे लोग इस काम की शुरुआत नहीं कर सकेंगे। एशिया में तो देहात ही हैं, इसलिए यह काम वहीं से शुरू

होगा, तो वह अपने-आप हो जायगा और जबरदस्ती से 'प्रोलीटेरियन' बनाने की भयानक प्रक्रिया में से एशिया बच जायगा।

—मनुभाई पंचोली

गुजरात के सुविख्यात शिक्षाशास्त्री

गुजरात के अग्रणी अब तो सोचें

इंजीनियरी का कोर्स कठिन है, परन्तु भविष्य में लाभदायी है, इसलिए माता-पिता लड़के को कोर्स छोड़ देने की सलाह देने के बजाय खूब मेहनत लगाकर प्रयत्न करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। उसी तरह ग्रामदान का कार्यक्रम देश के लिए आवश्यक और लाभप्रद हो, तो कठिन होनेपर भी उस कार्यक्रम में पूरे जोश के साथ पिल पड़ना चाहिए। हम गुजरातवासी अपने को देश में कुछ ज्यादा सयाने समझते हों, तो हमको यह कार्यक्रम पहले उठा लेना चाहिए।

गुजरात की राजनीति, गुजरात की अर्थनीति, रचनात्मक कार्य उलटी दिशा में जा रहे हैं। हमने अपनी पुरानी पूँजी खर्च कर डाली, इसकी हमें चिंता होनी चाहिए। हम एकता में पीछे हट रहे हैं, लोगों का विश्वास गँवा रहे हैं, शासन के कार्यभार की शिथिलता का शिकार हो रहे हैं, तो गंभीरता से सोचना पड़ेगा कि इसके मूलभूत कारण कौन-से हैं।

आज के उलटे प्रवाह को पलटने के लिए, गांधीजी के स्वप्न का स्वराज्य लाने के लिए ग्रामदान के अलावा अन्य कोई कार्यक्रम नजर आता है, तो फिर इस कार्यक्रम को हम क्यों नहीं उठा लेते ?

आलस्य और अल्प संतोष छोड़कर अब गंभीरता से सोचने का समय आ गया है। इस कार्यक्रम के बारे में अब अगर हम बेखबर रहेंगे, तो हमारा बहुत बड़ा नुकसान होगा।

—केशुभाई भावसार
गुजरात के अग्रणी रचनात्मक कार्यकर्ता

सारी संपत्ति समाज की है

आज तक मनोविज्ञान का जो विकास हुआ है, उस पर से ऐसा फलित नहीं होता कि मानव-स्वभाव में यह मिल्कियत की बात रूढ़ हो गयी है। व्यक्तिगत मालिकी मानव-स्वभाव का मूलभूत गुण है, ऐसा नहीं माना जाता। उलटे मनोविज्ञान ने तो ऐसा दिखा दिया है कि मानव स्वभाव परिवर्तनशील है। दुनिया मे इस विश्वास से काम किया जाता है कि मानव स्वभाव को शिक्षित किया जा सकता है, मनुष्य की वृत्तियाँ बदली जा सकती हैं।

व्यक्तिगत मालिकी का इतिहास आप देखिए। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। पहले के जमाने मे मनुष्य कबीले बनाकर रहते थे। जो कुछ संपत्ति थी, वह बस छोटे से समूह की थी। व्यक्तिगत मालिकी का विचार पीछे से आया। शरीर में जैसे विविध कोष ग्रथित हुए हैं, वैसी ही मानव-समाज की बनावट है।

मनुष्य का स्वतन्त्र व्यक्तित्व और व्यक्तिवाद दोनों अलग-अलग चीजें हैं। आज मानव-समाज वहाँ पहुँचा है, जहाँ मनुष्य रेत के कणों की तरह एक Inorganic mass बनकर जी रहे हैं, उसमें से हमे फिर से एक Organic community जीवंत मानव-समुदाय बनाना है।

व्यक्तिगत मालिकी की बात किसी विज्ञान से भी सिद्ध नहीं हुई है। उससे तो समाज मे भेद की दीवारें खड़ी हुई हैं। मालिकी का विचार दूर होने से संघर्ष दूर हो जाता है। मालिकी की प्रथा से समाज का नैतिक पतन हो रहा है। जो मालिक नहीं है, वह लाठी, रिश्वत, अप्रामाणिकता जैसे गलत साधनों से दूसरे की मालिकी हड़पना चाहता है। लड़ाई, अशान्ति और नैतिक पतन की इस जड़ को हमें उखाड़ फेंकना है।

कोई धर्मशास्त्र या समाजशास्त्र कहता नहीं है कि व्यक्ति मालिक है। सब यही कहते हैं कि पृथ्वी पर जो कुछ है, वह सबका है, भगवान् की देन है, कुदरत की बख्शीस है। मनुष्य मिट्टी नहीं खाता है, धरती मे अनाज पैदा करके खाता है। उत्पादन की प्रक्रिया सामाजिक प्रक्रिया Social Process है। उसमे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्षरूप से अनेक लोग सहायता करते हैं। बहुत-सी चीजें एकसाथ होती हैं, तब उत्पादन होता है। इसलिए उसमे पूरे समाज का हिस्सा है। समस्त संपत्ति समाज की है, यह मूलभूत विचार ग्रामदान के पीछे है।

—जयप्रकाश नारायण

बारडोली
४-६-'६६

जागो-जागो हे गांधीजन!

चर्चा-विचार से ज्ञान-विज्ञान का विकास होता है, परन्तु मात्र शंका ही करते रहेंगे तो 'हैमलेट' जैसी दशा होगी। आखिर काम होगा श्रद्धा से। वहाँ मोर्चे पर लड़ने के लिए जानेवाले जवान क्या यह पूछने के लिए रुकते हैं कि हम जिन्दा वापस आयेंगे या नहीं? हिमालय चढ़नेवाले को क्या आश्वासन दे

आलस्य और अल्प संतोष छोड़कर अब गंभीरता से सोचने का समय आ गया है। इस कार्यक्रम के बारे में अब अगर हम बेसबर रहेंगे, तो हमारा बहुत बड़ा नुकसान होगा।

—केशुभाई भावसार
गुजरात के अग्रणी रचनात्मक कार्यकर्ता

सारी संपत्ति समाज की है

आज तक मनोविज्ञान का जो विकास हुआ है, उस पर से ऐसा फलित नहीं होता कि मानव-स्वभाव में यह मिल्कियत की बात रूढ़ हो गयी है। व्यक्तिगत मालिकी मानव-स्वभाव का मूलभूत गुण है, ऐसा नहीं माना जाता। उलटे मनोविज्ञान ने तो ऐसा दिखा दिया है कि मानव स्वभाव परिवर्तनशील है। दुनिया में इस विश्वास से काम किया जाता है कि मानव स्वभाव को शिक्षित किया जा सकता है, मनुष्य की वृत्तियाँ बदली जा सकती हैं।

व्यक्तिगत मालिकी का इतिहास आप देखिए। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। पहले के जमाने में मनुष्य कबीले बनाकर रहते थे। जो कुछ संपत्ति थी, वह उस छोटे से समूह की थी। व्यक्तिगत मालिकी का विचार पीछे से आया। शरीर में जैसे विविध कोष ग्रथित हुए हैं, वैसी ही मानव-समाज की बनावट है।

मनुष्य का स्वतन्त्र व्यक्तित्व और व्यक्तिवाद दोनों अलग-अलग चीजें हैं। आज मानव-समाज वहाँ पहुँचा है, जहाँ मनुष्य रेत के कणों की तरह एक Inorganic mass बनकर जी रहे हैं, उसमें से हमें फिर से एक Organic community जीवंत मानव-समुदाय बनाना है।

व्यक्तिगत मालिकी की बात किसी विज्ञान से भी सिद्ध नहीं हुई है। उससे तो समाज में भेद की दीवारें खड़ी हुई हैं। मालिकी का विचार दूर होने से संघर्ष दूर हो जाता है। मालिकी की प्रथा से समाज का नैतिक पतन हो रहा है। जो मालिक नहीं है, वह लाठी, रिश्वत, अप्रामाणिकता जैसे गलत साधनों से दूसरे की मालिकी हड़पना चाहता है। लड़ाई, अशान्ति और नैतिक पतन की इस जड़ को हमें उखाड़ फेंकना है।

कोई धर्मशास्त्र या समाजशास्त्र कहता नहीं है कि व्यक्ति मालिक है। सब यही कहते हैं कि पृथ्वी पर जो कुछ है, वह सबका है, भगवान् की देन है, कुदरत की बख्शीस है। मनुष्य मिट्टी नहीं खाता है, धरती में अनाज पैदा करके खाता है। उत्पादन की प्रक्रिया सामाजिक प्रक्रिया Social Process है। उसमें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्षरूप से अनेक लोग सहायता करते हैं। बहुत-सी चीजें एकसाथ होती हैं, तब उत्पादन होता है। इसलिए उसमें पूरे समाज का हिस्सा है। समस्त संपत्ति समाज की है, यह मूलभूत विचार ग्रामदान के पीछे है।

—जयप्रकाश नारायण

बारडोली
४-६-'६६

जागो-जागो हे गांधीजन!

चर्चा-विचार से ज्ञान-विज्ञान का विकास होता है, परन्तु मात्र शंका ही करते रहेंगे तो 'हेमलेट' जैसी दशा होगी। आखिर काम होगा श्रद्धा से। वहाँ मोर्चे पर लड़ने के लिए जानेवाले जवान क्या यह पूछने के लिए रुकते हैं कि हम जिन्दा वापस आयेंगे या नहीं? हिमालय चढ़नेवाले को क्या आश्वासन दे

सकता है कि तुम गिरोगे ही नहीं ? जीवन के हर क्षेत्र मे श्रद्धा के साथ कदम बढ़ाना पड़ता है।

हम जो लोग गांधी, अहिंसा, सर्वोदय की बातें करते हैं, उनका उद्देश्य क्या है ? वह कितने बरसों मे प्राप्त कर सकेंगे ? महात्मा के सामने एक लक्ष्य था कि स्वराज्य के बाद विषमता घटेगी, सामाजिक न्याय और समानता की स्थापना होगी। इस उद्देश्य को सफल करने के लिए वे लाखों की एक बड़ी सेना खड़ी करना चाहते थे कि जिनके दिल मे एक आग हो। ऐसा हो सका होता, तो देश का नक्शा आज क्या होता ? उसकी कल्पना आप कर सकते हैं। बापू गये। विनोबा बापू की स्थिति में थे नहीं। फिर भी उन्होंने प्रयत्न किया कि नये भारत का निर्माण करने की तमन्नावाले देश में क्रांतिकारी सेवकों का एक समुदाय खड़ा हो। आप सब यहीं गुजरात के गांधी परिवार के मित्र इकट्ठा हुए हैं, आप सब मे गांधीजी की कल्पना की सर्वांगीण क्रांति के लिए कितनी तीव्रता है ?

आप अच्छे विद्यालय चलाते हैं, खादी का काम करते हैं, आप मे से कई लोग राजनीति में भी हैं। ज्यादातर लोगों का कांग्रेस के साथ निकट का संबंध भी है। परन्तु क्या आप हृदय पर हाथ रखकर कह सकेंगे कि गुजरात सरकार की नीति गांधी-विचार के अनुरूप बनाने मे आपको सफलता मिली है ? क्या गुजरात सरकार गांधी की दिशा मे जा रही है ? गुजरात की राजनीति पर सर्वोदय की छाप है ?

फिर भी शंकाएँ ही उठाते रहेंगे ? तौलते ही रहेंगे ? त्रिविध कार्यक्रम को व्यापक, संगीन और कारगर बनाने का हम जरूर विचार करें।

देश के पाँच लाख गाँवों के ग्रामदान हो जाते हैं, तो हम लोग देश को गांधी की दिशा में जरूर मोड़ सकेंगे। यह कितना बड़ा काम है! विधानसभा या लोकसभा में जाने से कौन-सा बड़ा काम हो जायगा? इसलिए इस कार्यक्रम के लिए जिनका समर्थन हो, उनकी पूरी शक्ति इसके पीछे लगनी चाहिए।

—जयप्रकाश नारायण

बारडोली
४-९-'६६

भारत और अणुबम

हमें पहले तो यह सोचना चाहिए कि हमको अणुबम की आवश्यकता क्यों है? वह किसी ध्येय के साधनरूप ही हो सकता है, क्योंकि वह अपने में तो कोई ध्येय है नहीं। हम संरक्षण को चाहते हैं, जो व्यक्ति और राष्ट्र दोनों के लिए वांछनीय है। परन्तु मैं यहाँ बता देना चाहता हूँ कि संरक्षण को बाहर से ही नहीं अन्दर से भी खतरा है। अगर आप राष्ट्र के आर्थिक विकास की प्रगति चालू नहीं रखेंगे, तो मैं कहूँगा कि आपको गंभीर संकट का सामना करना पड़ेगा और उससे देश छिन्न भिन्न हो सकता है। इसलिए जब हम राष्ट्र के संरक्षण के ध्येय के बारे में सोचते हैं, तब हमें अन्दर के और बाहर के दोनों खतरों का पूरा खयाल रखना होगा।

चाहिए। इतना करने से हम अपनी अन्दरूनी स्वस्थता में वृद्धि कर सकेंगे और बाहरी स्वस्थता में भी।

बम्बई —डॉ॰ विक्रम साराभाई
१-६-'६७ अणुशक्ति कमीशन के अध्यक्ष

अपूर्व कीमिया

मैं इस आन्दोलन को ज्यादा-से-ज्यादा महत्त्व देता हूँ। इसे सफल करने में सब तरह की सहायता करना सभी का फर्ज है। यह कोई एक पक्ष का आन्दोलन नहीं है। किसी भी पक्ष के साथ जुड़े रहने पर भी सबको इसमें हिस्सा लेना चाहिए। जीवन बहुत-सी चीजों के मिश्रण से जटिल हो गया है। अर्थशास्त्र या किसी दूसरे शास्त्र के बँधे नियमों से उसे समझना अशक्य है। इसलिए हमेशा कोई अनोखी और अभूतपूर्व कीमिया जीवन के प्रश्न को हल कर दे, यह सम्भव रहता है। विनोबाजी के इस आन्दोलन से यह सत्य सिद्ध हो चुका है।

हम याद रखें कि यह एक क्रान्तिकारी आन्दोलन है। हिंसक बलवे के अर्थ में नहीं, परन्तु उसकी वजह से समाज में जड़मूल से जो परिवर्तन हो रहा है, उस अर्थ में यह अवश्य क्रान्तिकारी है। इस आन्दोलन ने जो हवा पैदा की है, उससे भारत के बड़े-बड़े प्रश्न हल करना सम्भव हो गया है। यह ऐसा मार्ग है, जिसे पोथी पण्डित अर्थशास्त्री नहीं समझा सकते, शायद खुद भी नहीं समझ सकते होंगे।

—जवाहरलाल नेहरू

•

ग्राम-स्वराज्य-साहित्य

लोकनीति-साहित्य

लोकनीति	२.००
सर्वोदय के आधार	०.२५
सर्वोदय विचार व स्वराज्य शास्त्र	१.२५
सर्वोदय और साम्यवाद	१.००
शासनमुक्त समाज की ओर	०.५०
ग्राम स्वराज्य : क्यों और कैसे ?	०.१५
स्थायी समाज-व्यवस्था	२.५०
सत्याग्रह विचार और युद्ध-नीति	३.००
सर्वोदय दर्शन	५.००
अहिंसक क्रांति की प्रक्रिया	४.००
मानवीय निष्ठा	२.००
लोकनीति विचार	२.००
दादा की नजर से लोकनीति	०.५०
गांधी का उत्तराधिकारी जवाहरलाल	०.५०
लोक-स्वराज्य	०.६०
आजादी खतरे में	०.४०
समाजवाद से सर्वोदय की ओर	०.३७
सीमा की समस्या और हमारी जिम्मेवारी	०.३०
लोकराज्य	०.२५
नगर स्वराज्य	०.२५
जनता का राज	०.२५
सर्वोदय और शासनमुक्त समाज	१.००
वर्ग संघर्ष	०.६२
यूगोस्लाविया का लोक-स्वराज्य	२.००
शोषण मुक्ति और नवसमाज	०.६२
लोक शक्ति का उदय	०.३५
लोकशाही कैसे लायें ?	०.३०
गाँव गाँव में अपना राज	०.५०
सर्वोदय विचार	०.७५
चुनाव और लोकतंत्र	०.७५

भूदान-ग्रामदान साहित्य

तूफान-यात्रा	३.००
भूदान गंगा (आठ खंड) प्रत्येक	१.५०
ग्रामदान	१.५०
दानधारा	१.००
प्रखंडदान	१.००
सुलभ ग्रामदान	०.८०
तूफान का संकेत	०.८०
ग्रामदान प्रश्नोत्तरी	०.५०
ग्राम पंचायत और ग्रामदान	०.३५